अयोध्या
एक सांस्कृतिक विरासत

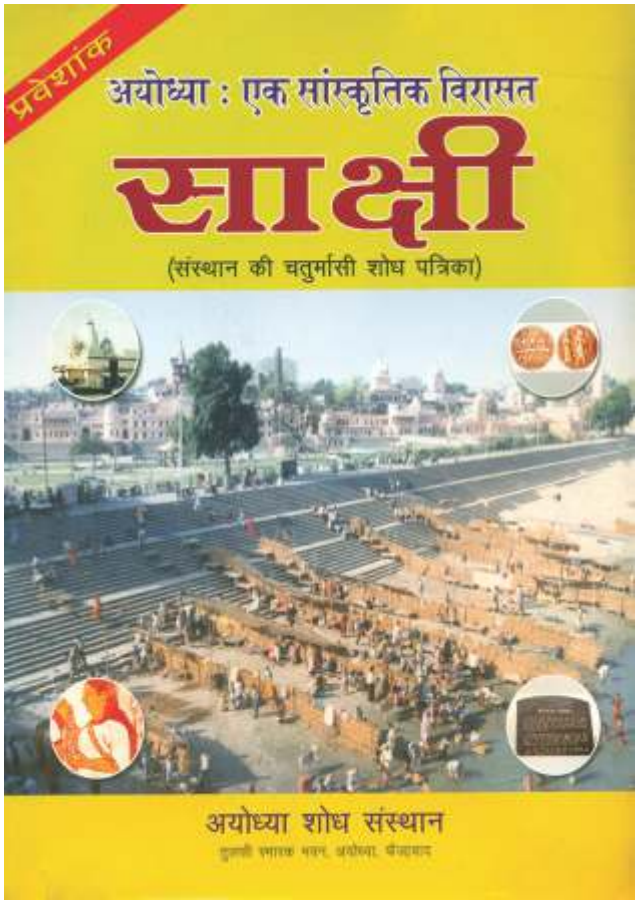

अयोध्या अथर्ववेद के वर्णन से लेकर आज तक भारतीय इतिहास, पुरातत्व, धर्म एवं राजनीति में समान रूप से महत्त्वपूर्ण रही है। अयोध्या सामान्य भारतवासी के लिए एक बहुत बड़े आस्था एवं विश्वास का केन्द्र है जिसके मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम प्रतीक हैं। वैष्णव धर्म का प्रमुख केन्द्र होने के बाद भी अयोध्या में इस्लाम के हजरत पैगम्बर शीश की दरगाह एवं बड़ी बुआ की मजार सभी धर्म के लोगों के लिए सामान्य आस्था का केन्द्र है। अयोध्या का इतिहास, पुरातत्व एवं वर्तमान इतना समृद्ध और विस्तृत है कि एक-एक पक्ष पर गम्भीर शोध कार्य की सम्भावना है।

यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि जब भारतीय पुरातत्व एवं इतिहास के समस्त साक्ष्य मौन हैं तब 5वीं शताब्दी ई.पू. इटली के तस्मानिया क्षेत्र में रामायण की कथा पर आधारित गुफाओं में सुन्दर चित्रों की शृंखला प्राप्त होती है। यदि 5वीं शताब्दी ई. पू. इटली में रामायण की कथा पर आधारित चित्र बने तो इन चित्रों को किसने बनाया, कब बनाया और उसके उद्‌गम स्थल भारत में क्या इसके समकालीन साक्ष्य प्राप्त हो सकते हैं। ये ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर में भारतीय संस्कृति की समृद्धि के प्रामाणिक तत्त्व छिपे हैं।

अयोध्या एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है। इसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन, बौद्ध यहाँ तक कि ईसाई धर्मों की विरासत विद्यमान है। साक्षी प्रवेशांक को प्रस्तुत करते समय एक सामान्य सांस्कृतिक पर्यटक की जानकारी हेतु फोटो सहित विवरण उपलब्ध कराये गये हैं जिसमें मन्दिर, कुण्ड, गुरुद्वारे आदि सहित पर्यटन सुविधाओं की जानकारी भी है। यह अयोध्या को जानने के लिए एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है।

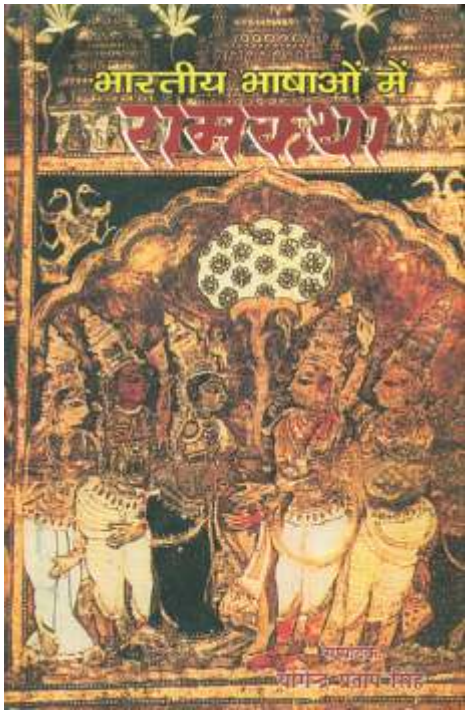

भारतीय भाषाओं में
रामकथा

अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, फैजाबाद की 'साक्षी' शोध पत्रिका का सद्यः प्रकाशित विशेषांक 'भारतीय भाषाओं में रामकथा' पुस्तकाकार रूप में आपके सामने है। एक शोध विशेषांक को पुस्तकाकृति का स्वरूप प्रदान करना स्वयं में सांस्कृतिक महत्त्व तथा भारतीय गौरव बोध की संकल्पना का प्रतीक है।

राम राष्ट्रीय संस्कृति के प्रतीक पुरुष हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मानवता के प्रतीक पुरुष राम सुमात्रा, जावा, कम्बोडिया, बर्मा, लंका, नेपाल, बोर्नियो आदि-आदि कितने देशों में स्वीकृत मानवतावादी चेतना के साक्ष्य हैं। देश की समस्त लोकभाषाओं में रामकथा 10वीं सदी से व्याप्त दिखाई पड़ती है। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी, सिंधी, कश्मीरी, पहाड़ी, पंजाबी, असमिया, बंगला, उड़िया, हिन्दी आदि समस्त भाषा रूपों में यह रामकथा कितनी आत्मीयतापूर्वक लोकग्राह्य रही है, इसकी उदाहरण यह कृति है।

भारतीय भाषाओं में रामकथा
सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-8031-399-8
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 220
साइज : 6.25" x 9.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2009

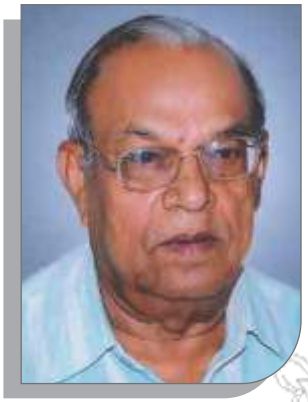

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।
कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष
काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

कोसल का इतिहास एवं संस्कृति

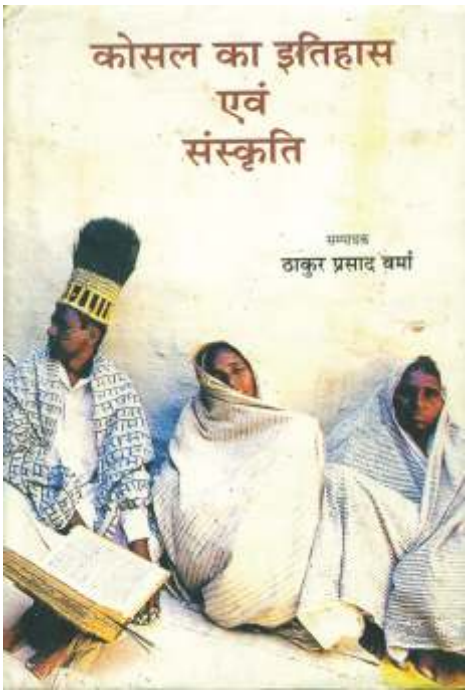

कोसल का इतिहास एवं संस्कृति
सम्पादक : प्रो.ठाकुर प्रसाद वर्मा
ISBN : 978-81-8031-429-6
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 236
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2010

कोसल का इतिहास भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। कोसल की धार्मिक परम्परा वैष्णव रही है जिसमें स्वयं राम की भगवत्ता ने लोक का नियमन तथा सांस्कृतिक जीवन की संजीवनी प्रदान किया। वैष्णवत्ता एवं वैष्णव परम्परा ने कोसल के इतिहास एवं संस्कृति को कल्याणप्रद बनाया। ऐतिहासिक वैशिष्ट्य के महत्वपूर्ण पक्षों अभिधानात्मक एवं ऐतिहासिक-भौगोलिक वैशिष्ट्य, प्राचीनतम राजवंशों का इतिहास, कोसल के राजाओं तथा राजवंशों का दीर्घकालिक इतिवृत्त, प्रशस्त राज्य-व्यवस्था एवं राज्यादर्श की स्थापना, विश्वविजय एवं चक्रवर्तित्व की ऐतिहासिक परम्परा, चिरविजयी तथा मानवतावादी इतिहास, कोसल का इतिहास, विश्व इतिहास का आदर्श प्रतिमान इत्यादि का विस्तृत वर्णन पुस्तक में किया गया है।

कोसल का सांस्कृतिक पक्ष भी उसके ऐतिहासिक पक्ष की भाँति विशिष्टताओं से युक्त रहा है। कोसल का युगयुगीन इतिहास सांस्कृतिक मूल्यों के सर्जन का साक्षी है। कोसल के शासकों ने मूल्यपरक संस्कृति का वितान विनिर्मित किया जो आज भी भारतीय संस्कृति के रूप में सर्वस्वीकृत के रूप में सर्वस्वीकृत है। कोसल के संस्कृति की विशेषता रही है कि यहाँ जन और संस्कृति का समन्वय रहा है। प्रायः प्रत्येक युग के इतिहास में संस्कृति का शाश्वत प्रवाह अक्षुण्ण रहा है। सम्पूर्ण भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता को कोसल की संस्कृति ने चरितार्थता प्रदान की है। इक्ष्वाकुवंशी राम ने स्वयं उत्तर एवं दक्षिण के सांस्कृतिक समन्वय का कार्य सम्पादित कर विभिन्न संस्कृतियों—राक्षस, वानर तथा अन्य समकालीन जन संस्कृतियों में समन्वय स्थापित किया था जो आज भी भारतीय संस्कृति का गौरवास्पद पक्ष है।

कोसल के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य सामाजिक व्यवस्था में वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठापना, पारिवारिक जीवन की अवधारणा तथा मर्यादित जीवनादर्श, नारी जीवन का चरम आदर्श तथा प्रतिष्ठा, कोसल की यज्ञीय परम्पराएँ, कृषि संस्कृति की स्थापना, मुद्रा, शिल्प एवं वास्तुगत वैशिष्ट्य का विस्तृत वर्णन किया गया है, प्राचीनतम मानुषीभाषा एवं आदिकाव्य का उद्गम क्षेत्र आदि का वर्णन पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा।

आशा है कि पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा जिज्ञासु पाठकों का मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगी।

प्रो. ठाकुर प्रसाद वर्मा

प्रो. ठाकुर प्रसाद वर्मा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के निवर्तमान अध्यक्ष हैं। अयोध्या की पुरातात्विक जानकारी और खनन से सम्बन्धित आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान में अयोध्या की ऐतिहासिकता को जानने के लिए वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता हैं।

लोक राम-कथा

प्रस्तुत पुस्तक 'लोक राम-कथा' में उत्तरभारत की अनेक लोक-बोलियों में प्रचलित लोकगीतों के माध्यम से लोक रामायण को अन्वेषित करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में यह भाव भी सक्रिय रहा है कि लोक की मौलिक और प्रचलित कथा में भिन्न अवधारणाओं को महत्त्व दिया जाये। लोक रामायण के रूप में बोलियों के अन्तर्गत लिखित काव्य ग्रन्थ भी है। इस तरह के काव्य ग्रन्थ कुछ ही बोलियों में मिलते हैं। अवधी में इस तरह के ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है। इनका परिचय भी यथासम्भव इस प्रस्तुति में सम्मिलित है। इस दिशा में यह प्रस्थानिक कार्य ही है। रामवृत्त को केन्द्र बनाकर रचे गये लोकगीतों-लोक आख्यानों की प्रचुरता का अन्दाज केवल इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि देश-विदेश में जिस तरह जन-जन में राम रमे हुए हैं उसी तरह उनके चरित्र अनुकीर्तन से सम्बन्धित लोक रचनाएँ भी असंख्य हैं।

रामकथा से सम्बन्धित विभिन्न अंचलों के लोकगीतों में लोकमंगल की भावना व्यक्त हुई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसी के सन्दर्भ में जिस लोक मंगल की सर्वतोभद्र प्रतिष्ठा की है वह लोकमंगल तुलसी के काव्य में लोक जीवन के प्रभाव से ही प्रतिष्ठित हुआ है। लोक मूल्यों के प्रति तुलसी की निष्ठा उनके लोकाभिराम में केन्द्रित हो जाती है।

लोक राम-कथा
सम्पादक : डॉ. श्यामसुन्दर दुबे
ISBN : 978-93-8131-585-5
मूल्य : ₹ 400
पृष्ठ संख्या : 175
साइज : 6.25" x 9.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2011

सम्पादक–डॉ. श्यामसुन्दर दुबे

जन्म : 12 दिसम्बर 1944 को बर्तलाई, हटा, दमोह, मध्य प्रदेश में हुआ ।

शिक्षा : एम.ए. पीएच.डी. ।

सम्प्रति : डॉ. दुबे स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त होकर वर्तमान में निदेशक, मुक्तिबोध सृजन पीठ, डॉ. हरी सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : श्री चंडी जी वार्ड, हटा (दमोह) म.प्र.-470775

प्रयाग की रामलीला

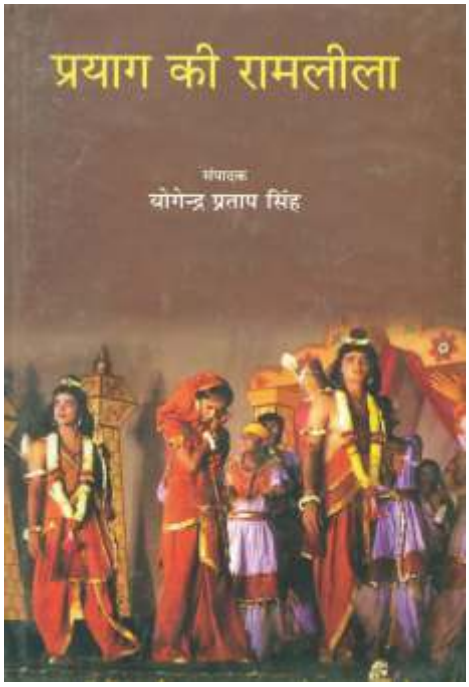

प्रयाग की रामलीला कब से आयोजित हो रही है, इसका साक्ष्य मुगल शासक अकबर काल से मिलने लगता है, किन्तु अर्थ यह नहीं कि प्रयाग की रामलीला अकबर के समय से शुरू हुई थी। प्रयाग में रामलीला का आयोजन मुगल काल के पहले से होता रहा है। जहाँ तक, भारत का प्रश्न है, इस देश में रामलीला ईसा की आरम्भिक शतियों से होती चली आ रही है। इसका सबसे प्राचीन साक्ष्य पतंजलि का महाभाष्य है, जिसमें वानरों तथा राक्षसों एवं उनके दलों के युद्धों का संकेत मिलता है। वाल्मीकि स्वयं कहते हैं, रामकथा में प्रवीण कुशीलव नामक चारण जातियाँ दरबारों में इसका तंत्रीस्वरों के साथ गायन करती रही हैं।

प्रयाग की रामलीला
सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-8031-613-5
मूल्य : ₹ 400
पृष्ठ संख्या : 118
साइज : 6.5" x 9.75"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2011

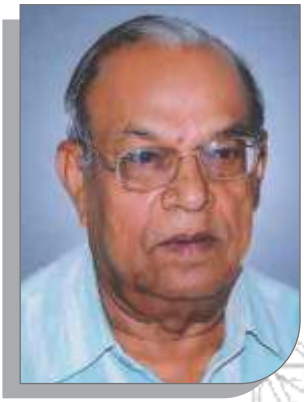

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।
कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष
काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

Ramlila
Varied Perspective

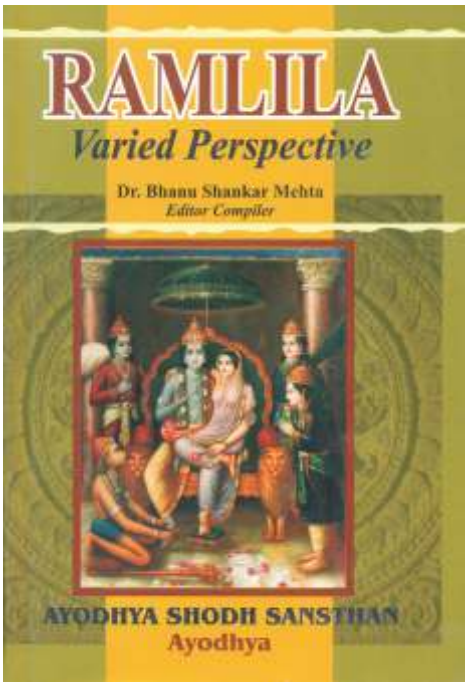

Ramlila is the oldest traditional theatre of India which formed near about 500 year ago. UNESCO declared is is a Intangible heritage in 2005. Ramlila is introduced as a course study in many foreign universities. This book *Ramlila : Varied Perspective* is published editorship of Dr. Bhanu Shankar Mehta in which the top most theatre under the persons, critics and well known authors contributed essays on Ramlila not only from India but throught the world. This is the first book of its own in which it shows what Ramlila is and how to perform it in theatre.

Ramlila : Varied Perspective
Editor : Dr. Bhanu Shankar Mehta
ISBN : 978-81-7646-798-8
Price : 995
Page No. : 348
Size :6.5"x9.75"
Publisher : B. R. Publishing Corporation, Delhi
Publishing Year : 2011

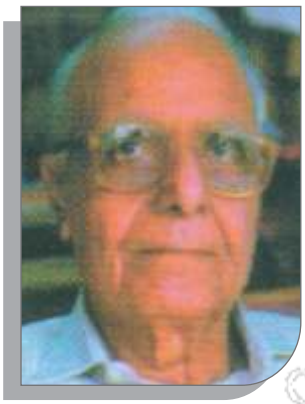

डॉ. भानुशंकर मेहता

जन्म : 25 मई, 1921, जौनपुर (उ.प्र.)।

रुचि-वृत्ति : गहरी सांस्कृतिक समझ, कुशल निदेशक, अभिनेता, सशक्त लेखक, चिकित्सा-शास्त्र के साथ-साथ अनेक स्तरीय साहित्यिक पुस्तकों/पत्रों का प्रकाशन, समर्पित रंग-अध्येता, मर्मज्ञ एवं देश में प्रचलित 'रामलीला-परम्परा' के मर्मज्ञ एवं आधिकारिक विद्वान।

अन्य सामाजिक सरोकार : रामकथा और रामलीला। काशी में अनेक वर्ष संत छोटे जी महाराज के मानस प्रतियोगिता सम्मेलन का संचालन तथा अनेक सुख्यात व्यासों के प्रवचन सुनने का अवसर। मानस संगम, कानपुर द्वारा सम्मान। वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, वड़ोदरा, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में रामलीला पर व्याख्यान। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' के संस्थापक और तीस वर्षों तक सम्पादन। विविध विषयों पर लेख और तीस पुस्तकें प्रकाशित।

पेशे से होमियोपैथिक डाक्टर रहे, काशी, रामनगर की रामलीला के विशेषज्ञ और कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्ध रहे।

निधन : 3 अक्टूबर, 2015

देश की पारम्परिक लोकचित्र शैलियों में
रामकथा

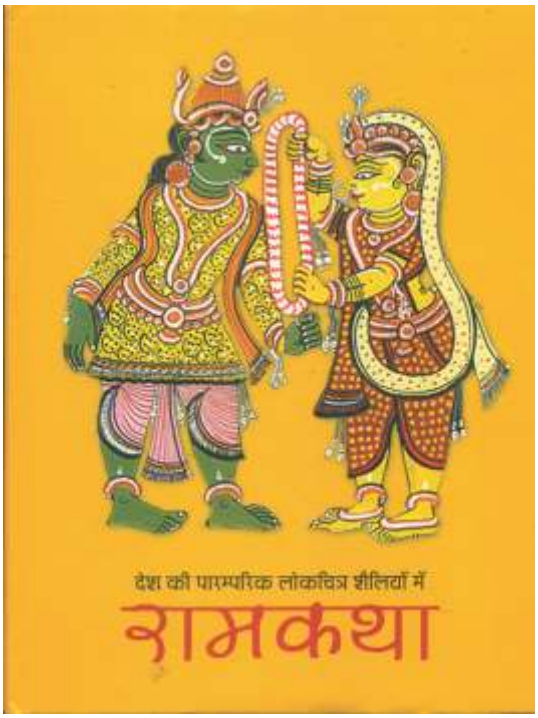

विभिन्न लोक शैलियों में इस कथा के सभी प्रसंगों का चित्रांकन किया गया है। बिहार की 'मधुबनी' शैली, उड़ीसा की 'पट' लोक शैली, महाराष्ट्र की 'चित्रकथी', पश्चिम बंगाल की 'पटुआ' शैली के अलावा आन्ध्रप्रदेश की 'कलमकारी' और 'चेरियाल पटम्' शैलियों में रामायण का अंकन विशेष रूप से ख्यात है। अनेक लघुचित्र शैलियों और मध्यकाल में प्रचलित लेकिन अब समाप्त प्रायः 'मालवी' और 'बुन्देली कलम' के रूप में प्रसिद्ध लोक शैलियों में विभिन्न मन्दिरों, कोठियों और हवेलियों में रामायण का अंकन किया गया है।

रामायण की पारम्परिक चित्रशैलियाँ ज्यादातर भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में ही प्राप्त होती हैं। यह शोध का विषय है।

देश की पारम्परिक लोकचित्र शैलियों में रामकथा
सम्पादक : बसन्त निरगुणे
मूल्य : ₹ 400
पृष्ठ संख्या : 184
साइज : 8.50" x 11.00"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान
प्रकाशन वर्ष : 2011

बसन्त निरगुणे
मध्य प्रदेश के आदिवासी, जनजातीय संस्कृति के विशेषज्ञ। मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् में कार्य का लम्बा अनुभव।

अयोध्या की संगीत परम्परा

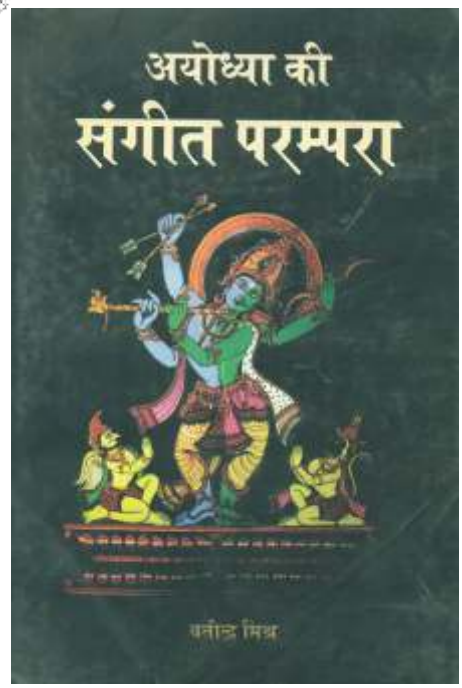

अयोध्या की संगीत परम्परा
यतीन्द्र मिश्र
ISBN :978-93-81797-00-6
मूल्य : ₹ 550
पृष्ठ संख्या : 266
साइज : 5" x 8"
प्रकाशक : भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2011

अयोध्या जैसे प्रमुख सांस्कृतिक नगर में संगीत और अनुष्ठानों का ऐसा अन्तर्गुम्फित सम्बन्ध रहा है, जिसे पूरी तथ्यपरक तटस्थता के साथ यहाँ संकलित किया गया है। एक हद तक इस शहर की सांस्कृतिक विरासत का सांगीतिक आकलन करने के उद्देश्य से यह पुस्तक अयोध्या के सन्दर्भ में संगीत व कलाओं का एक प्रामाणिक गजेटियर बन पड़ा है।

अयोध्या के देसी एवं मार्गी संगीत की, मठ एवं मन्दिर परम्पराओं की, कबीरपंथी एवं सूफी गायन की, लोक एवं शास्त्र के अन्तरालाप की तथा पदों, स्तुतियों एवं बन्दिशों की अनुपम झाँकी की एक निराली तस्वीर यहाँ पूरी निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत है। पूर्व में प्रकाशित एवं यत्र-तत्र बिखरी सामग्रियों का संचयन भी यहाँ किया गया है, जो इस पुस्तक को एक सांस्कृतिक रूपाकार देने में पूरी तरह न सिर्फ सफल हुआ है वरन उसने इस बहाने शोधार्थियों एवं रसिक अध्येताओं को भी अयोध्या की वरेण्य व महान परम्परा से सूत्रबद्ध होने का आमंत्रण सुलभ कराया है। अयोध्या की सांस्कृतिक थाती एवं उसका संगीत अपने आप में उतना ही ऊर्जस्वित, अकम्पित एवं सहज रहा है, जिस तरह अन्यान्य धार्मिक नगरों मसलन – उज्जैन, काशी, मथुरा, वृन्दावन एवं प्रयाग का रहा है। इस उपक्रम में पुरानी सामग्रियों, शोध-परक ग्रन्थों, बुजुर्गों से संवाद, मठ-मन्दिरों की परम्पराओं, प्रचलित किंवदन्तियों तथा जीवित सांगीतिक उपस्थितियों के चरित्र अनुशीलन से जो कुछ भी नवनीत रूप में सामने आया है, वह विनम्रतापूर्वक आपके सामने है।

यतीन्द्र मिश्र

हिन्दी कवि, सम्पादक और संगीत अध्येता हैं। उनके अब तक तीन कविता-संग्रह, शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी, नृत्यांगना सोनल मानसिंह एवं शहनाई उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ पर हिन्दी में प्रामाणिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। प्रदर्शनकारी कलाओं पर निबन्धों की एक किताब 'विस्मय का बखान' तथा कन्नड़ शैव कवयित्री अक्क महादेवी के वचनों का हिन्दी में पुनर्लेखन 'भैरवी' नाम से प्रकाशित हुआ है। वरिष्ठ कवि कुँवरनारायण पर एकाग्र तीन पुस्तकों क्रमशः कुँवरनारायण– 'संसार' एवं 'उपस्थिति', 'कई समयों में' एवं 'दिशाओं का खुला आकाश', अशोक वाजपेयी के गद्य का एक संचयन 'किस भूगोल में किस सपने में' तथा अज्ञेय काव्य से एक चयन 'जितना तुम्हारा सच है' प्रकाशित हैं।

साथ ही, फ़िल्म निर्देशक एवं गीतकार गुलज़ार की कविताओं एवं गीतों के चयन क्रमशः 'यार जुलाहे' तथा 'मीलों से दिन' नाम से सम्पादित हैं। 'गिरिजा' का अंग्रेजी, 'यार जुलाहे' का उर्दू तथा अयोध्या शृंखला कविताओं का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

उन्हें रज़ा पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद युवा पुरस्कार, हेमन्त स्मृति कविता सम्मान सहित भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की कनिष्ठ शोधवृत्ति एवं सराय, नयी दिल्ली की स्वतंत्र शोधवृत्ति मिली हैं। साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों हेतु भारत के प्रमुख नगरों समेत अमेरिका, इंग्लैण्ड, मॉरीशस एवं अबु धाबी की यात्राएँ की हैं। अयोध्या में रहते हैं तथा समन्वय व सौहार्द के लिए विमला देवी फाउण्डेशन न्यास के माध्यम से सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित करते हैं।

Ramkatha In Indian Languages

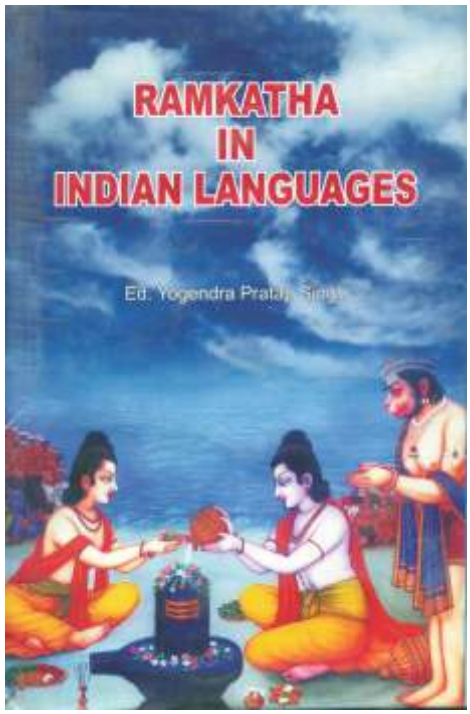

Ram is related not only with the spiritual power of India, but is the source of inspiration for the existence of smallest and the largest units in lndian folk life.

The lessons in critiquing Valmiki Ramayan and Shri Ramcharit Manas and their elucidation with new techniques of criticism were taught to Indians by foreign scholars. H .N. Wilson was the first scholar to evaluate Ramayan and get it published by the Royal Asiatic Society in the 19th century. Thereafter scholars like L.P. Lesitory, J.N. Carpenter and Sir George Grierson ventured to work systematically on Ramayan and published their work in 19th century. In the 20th century special attention was given to specialized evaluation of Tulsi Ramayan in the foreign countries.

However, the contribution of Italian scholar Father Camil Bulcke remains most serious and invaluable in the realm of Ramayana's evaluation.

Ramkatha in Indian Languages
Edited by : Dr. Yogendra Pratap Singh
ISBN : 978-81-8031-706-4
Price : 600
Page No. : 216
Size :6.25"x9.5"
Publisher : Lokbharti Prakashan, Allahabad
Publishing Year : 2012

अनुवादक : डॉ. के.जी. श्रीवास्तव

पूर्व उप कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय

डॉ. के. जी. श्रीवास्तव जी ने पूरे मनोयोग से इस पुस्तक का अनुवाद कार्य किया जिसका कोई पारिश्रमिक भी नहीं लिया।

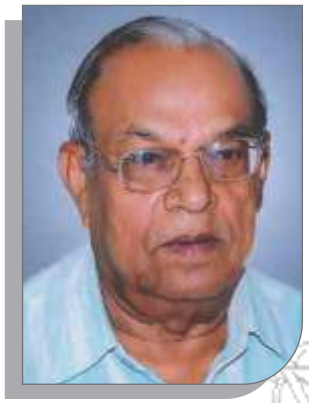

Dr. Yogendra Pratap Singh

- Former Professor & Head of Hindi Department, Allahabad University
- Ex-Director, Institute of Correspondence Courses, Allahabad University
- Prestine Head, Hindustani Academy

Critical Literature : Hindi Vaishnav Bhaktikavya Mein Nihit Kavyadarsh Evam Kavyashastriya Siddhant, Bhartiya Kavyashastra, Bhartiya Kavyashastra Ki Rooprekha, Kavyang Parichay, Ramcharitmanas Ke Rachnashilp Ka Vishleshan, Tulsi Ke Rachna Samarthya Ka Vivechan, Tulsi : Rachna Sandarbh Ka Vaividdhya, Lila Aur Bhakti Ras, Kabir Ki Kavita, Acharya Ramchandra Shukla : Nibandh Sanrachna Aur Kavya Chintan, Kabir Sur Tulsi, Etihas Darshan Evam Hindi Sahitya Ke Etihas Ki Samsyaein, Bhartiya Kavyashastra Ki Bhumika, Sarjan Aur Rasasvadan : Bhartiya Paksh, Lokrakshak Tulsi .

Creative Literature: Geet Ardhshati (Geetikavya), Biti Shati Ke Naam, Urvashi (Gatha Giti), Gadhi Putra, Sagar Gatha (Natya Kavya), Bante Gaon tutatey Rishte (Upanyas) Devaki Ka Athvan Beta (Upanyas), Andhi Gali Ki Roshani (Upanyas), Tulsi Ki Jivangatha (Upanyas Shaili Mein Tulsi Ki Pramanik Jivani).

Edited : Shriramcharitmanas (Sampoorn), Balkand, Ayodhyakand, Sundarkand, Lankakand, Uttarkand, Vinaypatrika, Kavitawali (Samagra Sampadan Teeka tatha Bhumika Sahit), Jorovar Prakash, Krishna Chandrika Karunabharan Natak (Prachin Hastlikhit Pratiyon Ke Adhar Par).

Co - Writing: Hindi Sahitya Vol. 3, Hindi Sahitya Kosh Vol. 1 & 2, Kavyabhasha Bhartiya Paksh, Kavya Bhasha : Alankar Rachna Tatha Anya Samsyein, Ram Sahitya Kosh.

Magzines Edited : Anusandhan, Vikalp, Hindi Anushilan Tatha Hindustani.

राम : कला सन्दर्भ

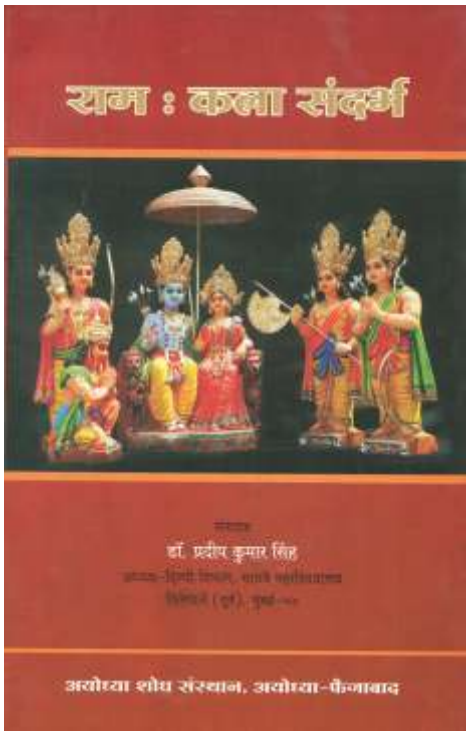

'राम' शब्द की ध्वन्यात्मकता में कई अर्थ निहित हैं। आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भों से अलग यदि इस शब्द की व्याख्या सांस्कृतिक-सन्दर्भों में की जाय तो आश्चर्यजनक इन्द्रधनुषी रंग दिखाई पड़ते हैं। 'अयोध्या शोध संस्थान' द्वारा विगत वर्षों में जो शोधकार्य, सर्वेक्षण एवं प्रकाशन के प्रयास किये गये हैं, उसी का संक्षेप रूप इस भाव से प्रस्तुत है कि मूल्यों की स्थापना में राम के किये गये प्रयास को आधुनिक सन्दर्भों में अकादमिक संस्पर्श भी प्रदान किया जाय।

कला का सन्दर्भ सामान्य रूप से श्रीकृष्ण से जोड़ा जाता है, परन्तु आश्चर्यजनक रूप से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं 'राम : कला सन्दर्भ' के समृद्धि के द्योतक हैं।

राम : कला सन्दर्भ
सम्पादक : डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
ISBN : 978-93-81980-00-2
मूल्य : ₹ 625
पृष्ठ संख्या : 176
साइज : 6.25" x 9.5"
प्रकाशक : सरस्वती प्रकाशन, मुम्बई
प्रकाशन वर्ष : 2012

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह

रचनाएँ—अष्टछापी कवियों के काव्य के रचनात्मक तत्वों के स्रोत एवं सृजनात्मकता, रसिकमणी महाकवि घनानन्द : एक आकलन, प्राचीन एवं मध्ययुगीन प्रमुख काव्य प्रतिभाएँ एवं सम्पादन भारतीय भाषाओं का राम साहित्य तथा वर्तमान लोकतंत्र की सामयिक प्रासंगिकता प्रमुख हैं। आप जैमिनी अकादमी द्वारा महाराष्ट्र रत्न, सम्पादक रत्न एवं अखिल भारतीय पत्रकारिता संगठन द्वारा पं. युगल किशोर शुक्ल पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित हैं।

सम्पर्क : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, साठये महाविद्यालय, विलेपार्ले (पूर्व) मुम्बई-57

भारतीय संस्कृति में गज

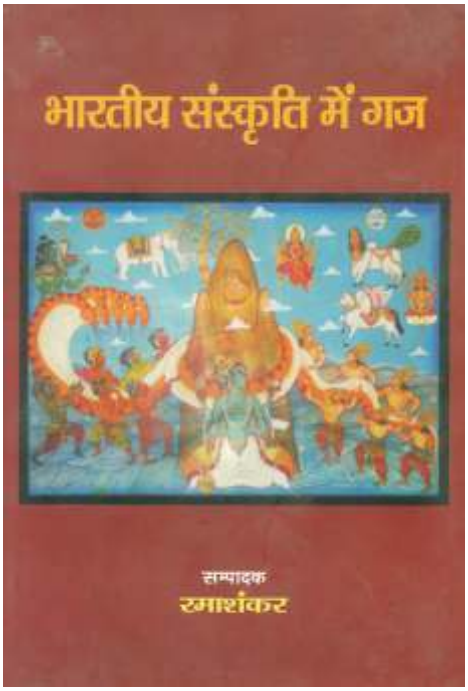

भारतीय संस्कृति में गज से सम्बन्धित अनेक आख्यान व कथाएँ पौराणिक ग्रन्थों से प्राप्त होती हैं। आदिकाल से जनमानस में 'गजराज' सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से समवेत रूप में रचे-बसे हुए हैं। गज ऐश्वर्य, समृद्धि एवं शक्ति का द्योतक है। विभिन्न शैलाश्रयों में गजांकन के दृश्य, आदिमानव के गज सानिध्य एवं उपयोगिता के भाव को उद्घोषित करता है। भारतीय स्थापत्यकला, चित्रकला, लोककला, मूर्तिकला, सिक्कों, ताम्रपत्रों एवं शिलालेखों आदि में गज के दर्शन होते हैं। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति की उन अवधारणाओं को प्रकाश में लाया गया है, जिसमें 'गज' भाव निहित है। विश्वास है कि भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले सुधी जनों को यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

अयोध्या शोध संस्थान विशेषतः नयी पीढ़ी के लिए भारतीय प्रतीक चिह्नों पर प्रकाशन का कार्य कर रहा है, जैसे गज, मस्त्य, अश्व, नाग, अष्ट मंगल आदि।

भारतीय संस्कृति में गज
सम्पादक : रमाशंकर
ISBN : 978-93-91799-17-8
मूल्य : ₹ 500
पृष्ठ संख्या : 160
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : कोशल पब्लिशिंग हाउस, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2013

रमाशंकर

पाच्रीय भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व तथा ब्राह्मी लिपि के अध्येता हैं। आप सन् 1976 में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति, फैजाबाद-क्षेत्र के पद पर आसीन हुए। आप कार्यवाहक निदेशक, राजकीय संग्रहालय, झाँसी, निदेशक उ.प्र. राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ, निदेशक जनजाति एवं लोककला संस्थान उ.प्र. के पद पर कार्य करते हुए अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दिया है।

कालान्तर उप निदेशक, संस्कृति निदेशालय, उ.प्र., लखनऊ के पद पर कार्यरत रहे हैं। पुरावशेष मर्मज्ञ श्री रमाशंकर अनेक राष्ट्रीय सेमिनारों में प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित हुए तथा अपने शोध-पत्रों को प्रस्तुत किया। अब तक आपके अनेक शोध परक लेख विभिन्न शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा गाँधी विचारधारा पर शोध निबन्ध प्रस्तुत करने पर आपको प्रमात्र-पत्र प्रदत्त किया है।

वर्तमान पता : इ-3259, राजाजीपुरम, लखनऊ (उ.प्र.)
मो. : 09839071929

Ramcharitmans Ocean of Science

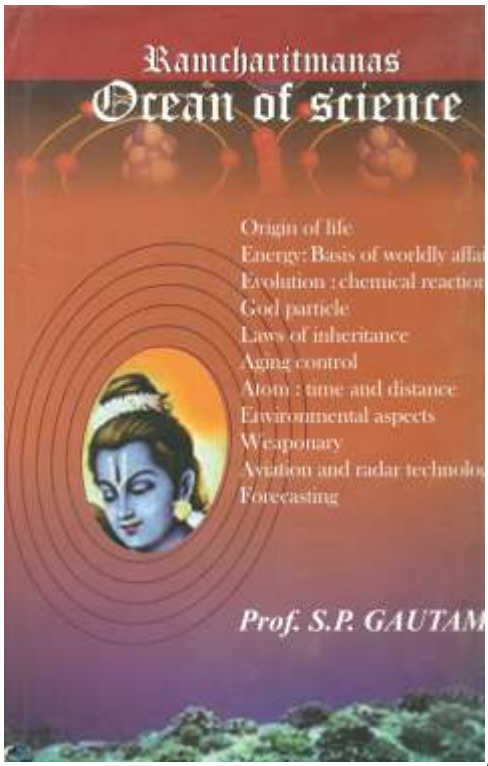

Goswami Tulsi Das has written Ramcharitmanas Mahakavya, a comprehensive book which is the gist ofall the six Shasttas, Nigarnas, Agarnas, Puranas and other scien tificaly rich spiritual books, He was a saint and well wisher of the whole world, thus opted strongest tool of performance SCIENCE for well being of the globe. His means of presentation was language of the common people and mode was poietic. So that without stress reader could read it with joy and the audience could equaly participate and get tremendously benefitted.

In the *very* first Shloka of the book Tulsi appreciated Scientists & expressed confidence in Science. Similarly he ends his book with the Science while mentioning in the last Shloka for being lucky to deal with Science.

Tulsi Das has Hong belief in science, treating non-living and living equal but assigned very clear superiority to human. Scientists top on hierarchy among human being indicates his vision.

Ramcharitmanas : Dream of Science
Author : Prof. S.P. Gautam
ISBN : 978-81-8031-741-5
Price : 550
Page No. : 104
Size :6.25"x9.75"
Publisher : Lokbharti Prakashan, Allahabad
Publishing Year : 2013

S.P. Gautam

Prof. S.P. GAUTAM, M.Sc., Ph.D, F.I.B.S., N.P.D.R.E (U.S.A), I.I.T.C (Portugal), RO.A (U.S.A) an environmentalist, is recepicnr of prestigious awards and honours including Indira Gandhi Priyadarshini Award on environment 2010, Pitamber Pant National Environment Fellowship Award, 2008 in recognition of outstanding contribution in the field of Environmental Science. He has held several prestigious posts (in his glorious career of spanning 34 years) like Chairman Central Pollution Control Board, Covr. ofIndia, Chairman M.P. Pollution Control Board, Bhopal, Vice Chancellor, R.D. University, jabalpur, Sectional Presid.ent Environmental Science Section,76ti Indian Science Congress, Dean Faculty of LiFe Sciences and Member Madhya Pradesh Public Service Cornmision, Indore, India. Prof. Gautam has irnrnenselv contributed in the field of environment through his experties in Microbial-Biotcchnolgy-Genedc engg. He has few dozens inrcrnationl patents to his credit.He has supervised 30 Ph.D., four .M. Phil and. 33 M.Sc. students. Prof.Gautam has published 120 research papers in the journals of national and international repute. He has completed dozens of research projects of international significance worth of few hundred crores and submitted FT1tProf. Gantam has edited four books and written Ioreward for 50 books. Prof. Gautam lead several Indian delegation abroad in the field of environment and pollution control and travelled exhaustively across the globe for the improvement of Environment and pollution control.

Email: spgautam1956@grnail.com.

श्री लीला रामायण

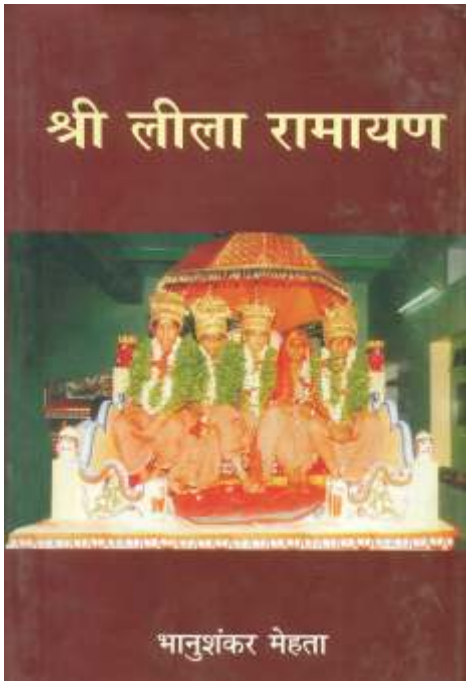

प्रस्तुत पुस्तक 'श्री लीला रामायण' में तुलसी की रामकथा है, उनका मानस है और गद्य-पद्य में उन्हीं की पंक्तियाँ है। प्रत्येक प्रसंग का मानस के अनुसार स्वरूप दे दिया है। यदि लीला करने वाले चाहें तो उनका कवित्त छन्द रीति से शृंगार कर सकते हैं पर ध्यान रहे अतिरेक न हो, कथा का रस भंग न हो। क्षेपक जोड़ने से कथा का विस्तार होगा और यदि समय अनुमति दे तो वैसा कर सकते हैं। इस लीला-संग्रह में कोई दुराग्रह नहीं है, कोई बाध्यता नहीं है पर जो केवल तुलसी के रामचरितमानस को रूपायित करना चाहते हैं। उनके लिए यह उपयोगी होगा। इसका पाठ आपको रामचरितमानस के संक्षिप्त पाठ का सुख देगा। राम जी की प्रेरणा से यह लिखा गया और उन्हीं के युगल चरणों में अर्पित है।

"तुलसी का लम्बा काल खण्ड काशी में व्यतीत हुआ। सम्भवतः सर्वाधिक शोध कार्य तुलसी की रचनाओं पर किये गये परन्तु जब तक रामलीला और व्यास परम्परा की सांस्कृतिक विरासत को जोड़ा नहीं जायेगा तुलसी का मूल्यांकन अधूरा रहेगा। इस कार्य में डॉ. भानुशंकर मेहता का प्रदेय सर्वाधिक है। भले ही मेहता जी तथाकथित 'अकादमिक' न हों परन्तु उनकी भावनाओं और प्रस्तुति को खारिज नहीं किया जा सकता।"

श्री लीला रामायण
डॉ. भानुशंकर मेहता
ISBN : 978-81-8031-856-6
मूल्य : ₹ 550
पृष्ठ संख्या : 260
साइज : 6.25" x 9.75"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2014

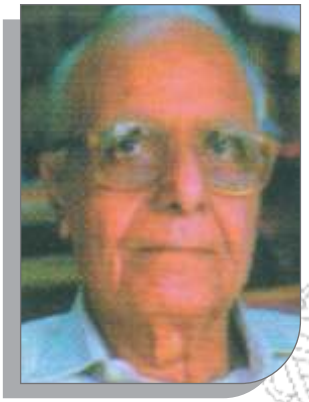

डॉ. भानुशंकर मेहता

जन्म : 25 मई, 1921, जौनपुर (उ.प्र.)।

रुचि-वृत्ति : गहरी सांस्कृतिक समझ, कुशल निदेशक, अभिनेता, सशक्त लेखक, चिकित्सा-शास्त्र के साथ-साथ अनेक स्तरीय साहित्यिक पुस्तकों/पत्रों का प्रकाशन, समर्पित रंग-अध्येता, मर्मज्ञ एवं देश में प्रचलित 'रामलीला-परम्परा' के मर्मज्ञ एवं आधिकारिक विद्वान।

अन्य सामाजिक सरोकार : रामकथा और रामलीला। काशी में अनेक वर्ष संत छोटे जी महाराज के मानस प्रतियोगिता सम्मेलन का संचालन तथा अनेक सुख्यात व्यासों के प्रवचन सुनने का अवसर। मानस संगम, कानपुर द्वारा सम्मान। वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, वड़ोदरा, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में रामलीला पर व्याख्यान। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' के संस्थापक और तीस वर्षों तक सम्पादन। विविध विषयों पर लेख और तीस पुस्तकें प्रकाशित।

निधन : 3 अक्टूबर, 2015

श्रीरामचरितमानस की वैज्ञानिक टीका

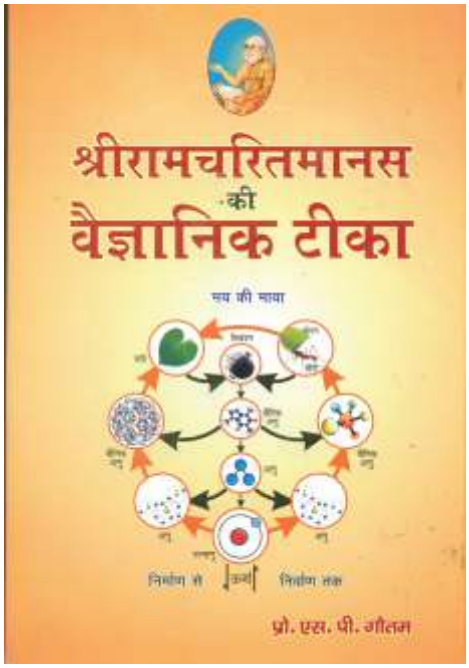

विज्ञान, धर्म और आध्यात्म की त्रिवेणी मानस पर आधारित प्रस्तुत रचना ''श्रीरामचरितमानस की वैज्ञानिक टीका'' तीनों धाराओं को एक में मिलाने वाली अद्‌भुत कृति है। इस पुस्तक के मनन से स्पष्ट होता है कि ये तीनों धाराएँ एक ही स्रोत से निकली एक ही पदार्थ की तीन प्रकार की प्रस्तुति है, जिसको यहाँ वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध किया है।

पाठक को विज्ञान की सीढ़ी प्रदान कर धर्म एवं अध्यात्म के अन्तिम छोर तक न केवल पहुँचाने का कार्य करेगी बल्कि उसके समक्ष जीवन एवं संसार की उत्पत्ति से प्रारम्भ होने वाली सभी प्रकार की क्रियाओं, प्रक्रियाओं का विश्लेषण, उनके परिणाम, परिमाणात्मक परिवर्तन एवं उनके अन्तर्सम्बन्धों का चित्रण स्पष्टतः परिलक्षित करेगी। अर्थात् संसार में मय की माया : निर्माण से निर्वाण तक की पूर्ण कहानी प्रस्तुत करती है।

"भारतीय साहित्यिक परम्परा अत्यन्त वैज्ञानिक रही है परन्तु दुर्भाग्य से मूल्यांकन वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर नहीं किया गया है। एक कारण यह भी हो सकता है कि साहित्य के विशेषज्ञ विज्ञान की दक्षता से जुड़ना कठिन महसूस करते हैं। ऐसे में वैज्ञानिक दृष्टि और विशेषज्ञ साहित्यिक रचनाओं का मूल्यांकन जब करें तब बात बन सकती है। अयोध्या शोध संस्थान द्वारा इसी प्रयास की शृंखला में कदाचित प्रथम पुस्तक प्रकाशित

श्रीरामचरितमानस की वैज्ञानिक टीका
प्रो. एस.पी. गौतम
ISBN : 978-93-81799-27-7
मूल्य : ₹ 800
पृष्ठ संख्या : 152
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : कोशल पब्लिशिंग हाउस, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2014

प्रो. एस.पी. गौतम

जन्म : 15 नवम्बर 1956
शिक्षा : एम.एससी., पीएच.डी., एफ.आई.बी.एस., एन.पी.डी.आर.एफ. (यू.एस.ए),
सम्पर्क : 13, रेजीडेंसी एरिया, डेली कॉलेज रोड, इंदौर-452001 (म.प्र.)

भारतीय भाषाओं में रामकथा
अवधी भाषा

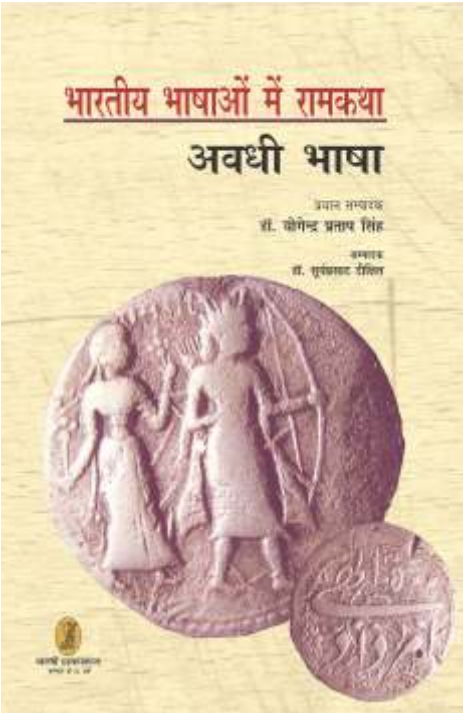

भारतीय संस्कृति के विभाजन को केन्द्र में रखते हुए भारतीय भाषाओं एवं राज्यों को पृथक्-पृथक् खंडों में बाँटने वाले विदेशी राजतन्त्रों के कारण भारत बराबर टूटते हुए भी, अपने सांस्कृतिक सन्दर्भों के कारण, अब भी एक सूत्र में बँधा है। एकता के सूत्र में बाँधने वाले सन्दर्भों में राम, कृष्ण, शिव आदि के सन्दर्भ अक्षय हैं। भारतीय संस्कृति अपने आदिकाल से ही राममयी लोकमयता की पारस्परिक उदारता से जुड़ी सम्पूर्ण देश, उसके विविध प्रदेशों एवं उनकी लोक व्यवहार की भाषाओं में लोकाचरण एवं सम्बद्ध क्रियाकलापों से अनिवार्यतः हजारों-हजारों वर्षों से एकमेव रही है। सम्पूर्ण भारत तथा उसकी समन्वयी चेतना से पूर्णतः जुड़ी इस भारतीय अस्मिता को पुनः भारतीयों के सामने रखना और इसका बोध कराना कि पश्चिमी सभ्यता के विविध रूपों से आक्रान्त हम भारतीय अपनी अस्मिता से अपने को पुनः अलंकृत करें। भारतीय भाषाओं में रामकथा को जन-जन तक पहुँचाने का यह हमारा विनम्र प्रयास है।

भारतीय भाषाओं में रामकथा : अवधी भाषा
प्रधान सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक : डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
ISBN : 978-93-5229-051-2
मूल्य : ₹ 300
पृष्ठ संख्या : 156
साइज : 6.5” x 9.5”
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

अवधी भाषा में यद्यपि रामकथा का बड़ा वैविध्य है, फिर भी, परिमाण और स्तर की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध काव्यधारा है—रामकाव्य की। अद्यावधि अवधी में शताधिक रामकाव्य रचे गये हैं। इस रामकाव्य परम्परा में रामकथा से सम्बन्धित समस्त पात्रों, स्थानों, घटनाओं और उनके रचनाकारों का समावेश किया जाना अभीष्ट है।

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

जन्म : 06 जुलाई, 1938, बन्नावाँ, रायबरेली (उत्तर प्रदेश)
प्रोफेसर तथा पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संस्थापक अध्यक्ष : पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय। अतिथि प्रोफेसर, लखनऊ, इलाहाबाद, सागर, बड़ौदा, उज्जैन, गोवा, कोचीन, वर्धा, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध : (1) ‘छायावादी गद्य’ (पीएच.डी.), (2) ‘व्यावहारिक सौन्दर्यशास्त्र’ (डी.लिट्.)

सम्पादन : ‘उत्कर्ष’, ‘उद्भव’, ‘अवधी’, ‘ज्ञानशिखा’, ‘शोध’, ‘कुलसन्देश’, ‘साहित्य भारती’, ‘संचारश्री, ‘चाणक्य’, ‘प्रभास’, ‘खोज’

स्नेहोपहार : ‘उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान’ से ‘साहित्य भूषण’ सम्मान, 1998; ‘दीनदयाल उपाध्याय सम्मान’, उ.प्र., 2002; हिन्दी साहित्य सम्मेलन से ‘साहित्य वाचस्पति’ उपाधि 1999; इण्टरनेशनल सेण्टर, कैम्ब्रिज से ‘इण्टरनेशनल मैन ऑफ दी इयर’ 1998-2013; ‘अमेरिकन इंस्टीट्यूट’ से ‘डिसटिंगिस्ट परसनालिटी ऑफ दी वर्ड’ 1998-2013

सम्पर्क : ‘साहित्यिकी’ डी-54, निरालानगर, लखनऊ-226020
वर्तमान में केन्द्रीय साहित्य अकादमी में हिन्दी भाषा के संयोजक और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग में अध्यक्ष पद पर हैं।

भारतीय भाषाओं में रामकथा
पहाड़ी भाषा

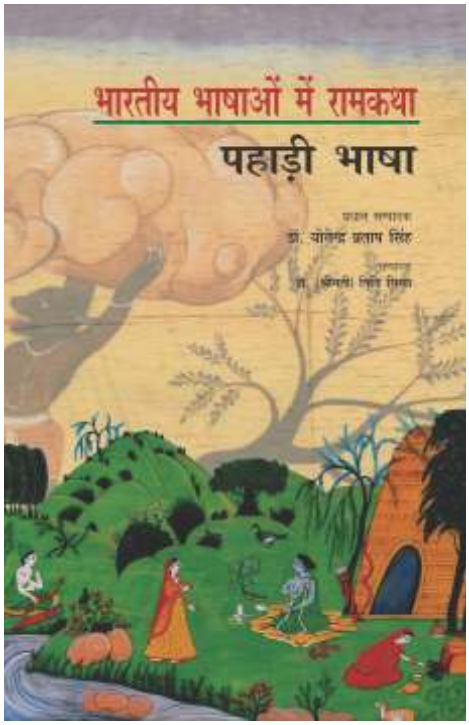

पहाड़ी भाषा में रामकथा का अति महत्त्व है। आज के परिवर्तनशील युग में मानव आधुनिकता की दौड़ में, चकाचौंध में सुखशान्ति की अपेक्षा रखता है, जो नितान्त असम्भव है। भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्श, नैतिकता, सामाजिकता का जो निदर्शन रामकथा में लक्षित होता है, उनका थोड़ा-सा भी चिन्तन-मनन करें, तो मानव को एक स्वर्गिक आनन्द की प्राप्त होगी, जिसकी आज के युग में महती आवश्यकता है।

भारतीय भाषाओं में रामकथा : पहाड़ी भाषा
प्रधान सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक : डॉ. (श्रीमती) निधि सिन्हा
ISBN : 978-93-5229-050-5
मूल्य : ₹ 250
पृष्ठ संख्या : 112
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

डॉ. (श्रीमती) निधि सिन्हा

जन्म : 23 दिसम्बर 1960
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, चित्रकला); डी.फ़िल्; डी. लिट्.
शैक्षिक उपलब्धियाँ : शैक्षिक सलाहकार (इग्नू); हिन्दी-संस्कृत वार्ताकार, आकाशवाणी, नजीबाबाद
प्रकाशन : सन्त पानपदास का साहित्य
विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित
शोध परियोजना : यू.जी.सी. द्वारा प्रदत्त तीन लघुशोध परियोजना पूर्ण
सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून
सम्पर्क : 8/21, तपोवन एन्क्लेव, उपडाकघर-तपोवन, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)

भारतीय भाषाओं में रामकथा
बांग्ला भाषा

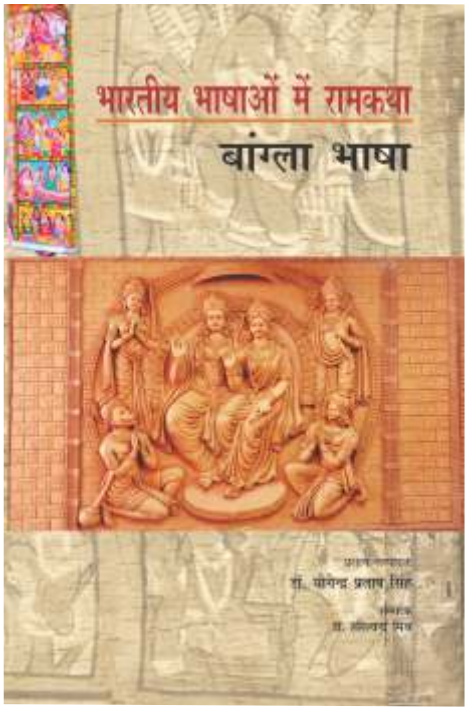

बंगाल में रामकथा के बारे में बात आरम्भ की जाय तो अच्छा होगा कि रवीन्द्रनाथ के कथन से ही कहना शुरू हो। 'लोक साहित्य' पुस्तक के 'ग्राम्य साहित्य' प्रकरण में रवीन्द्रनाथ अपनी बात प्रस्तुत करते हैं—"बंगला ग्राम्य गान में हर-गौरी एवं राधा-कृष्ण की कथा के अलावा सीता-राम एवं राम-रावण की कथा भी पायी जाती है किन्तु तुलना की दृष्टि से अल्प है।...बंगाल की मिट्टी में उस रामायण की कथा हर-गौरी और राधा-कृष्ण की कथा के ऊपर सिर नहीं उठा पायी, वह हमारे प्रदेश का दुर्भाग्य है। जिसने राम को युद्ध-क्षेत्र में एवं कर्म-क्षेत्र में देवता का आदर्श माना है, उसके पौरुष, कर्तव्यनिष्ठा एवं धर्मपरकता का आदर्श हमारी अपेक्षा उच्चतर है।"

भारतीय भाषाओं में रामकथा : बांग्ला भाषा
प्रधान सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक : डॉ. हरिश्चन्द्र मिश्र
ISBN : 978-93-5229-052-9 (सजिल्द)
मूल्य : ₹ 250 (सजिल्द)
पृष्ठ संख्या : 136
साइज : 6.50" x 9.50"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

डॉ. हरिश्चन्द्र मिश्र

जन्म : 1 मार्च 1954

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., इलाहाबाद विश्वविद्यालय

पिछले 22 सालों से विश्वभारती में अध्यापन

प्रकाशित पुस्तकें : भक्तिकालीन कृष्ण काव्य और मानव-मूल्य, भक्तिकालीन मानव-मूल्य और सन्त साहित्य, गोदान का मानववाद, बंगाल के बोल और उनका काव्य (दो खण्ड), साहित्य इतिहास दर्शन और हिन्दी साहित्य की विकास प्रक्रिया

सम्पादन : सरल महाभारत (सात खण्ड)

सम्पर्क : विश्वभारती, शान्तिनिकेतन (प. बं.)

भारतीय भाषाओं में रामकथा
कन्नड़ भाषा

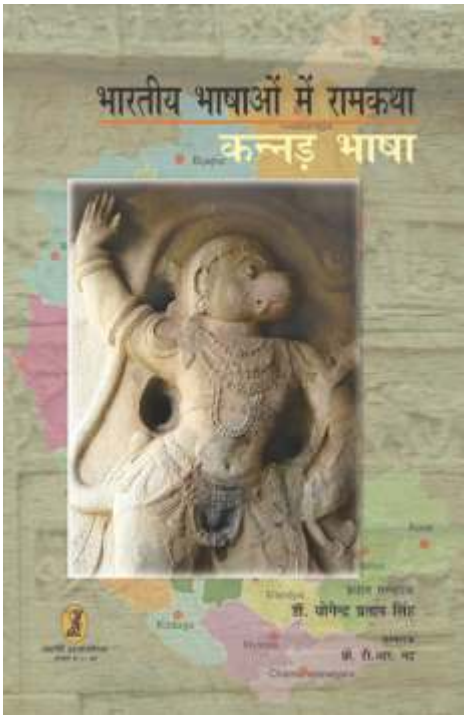

कन्नड़ में रामकथा की भरमार का मुख्य कारण यह रहा है कि कन्नड़ प्रदेश विभिन्न धार्मिक सन्तों की कर्मभूमि रही है। रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य एवं शंकराचार्य आदि ने यहाँ अपने मतों का खूब प्रचार किया और विशेष रूप में आचार्य मध्वाचार्य के वैष्णव मत का खूब प्रचार-प्रसार यहाँ रहा है। इसलिए रामकथा को लोगों की अधिक स्वीकृति मिल गयी और राम पूर्ण रूप से यहाँ के लोकजीवन और लोकमानस में घुल-मिल और समा गये हैं।

भारतीय भाषाओं में रामकथा : कन्नड़ भाषा
प्रधान सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक : प्रो. टी. आर. भट्ट
ISBN : 978-93-5229-053-6
मूल्य : ₹ 225
पृष्ठ संख्या : 98
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

प्रो. टी.आर. भट्ट

जन्म तिथि : 29 अक्टूबर, 1944
पूर्व प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी. (हिन्दी); डिप्लोमा इन फ्रेंच, डिप्लोमा इन ट्रान्सलेशन।
प्रकाशित कृतियाँ : 'पन्त और बेन्द्रे की काव्य-चेतना', 'हिन्दी-कन्नड़ साहित्य : दशाएँ और दिशाएँ', 'सौन्दर्य मीमांसा', 'शम्बूक और शूद्र तपस्वी : एक मूल्यांकन', 'कवि मनीषी विनायक गोकाक', 'कन्नड़ की रामकाव्य-परम्परा', 'नदी के साथ बहते', 'कावेरी से सागर तक', 'फ्रेंच कलियिरि', 'दक्षिण का रंगमंच'।
सम्मान एवं पुरस्कार : मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'कवि मनीषी विनायक गोकाक' पर हिन्दीतर भाषी लेखक पुरस्कार (1993), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ का 'सौहार्द सम्मान'(1999), 'अखिल भारतीय हिन्दी सेवी सम्मान' 2011 का 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार', केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से अगस्त 2011 में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त पुरस्कार।
सम्पर्क : 'प्रज्ञाश्री', छठा क्रास, कल्याणनगर, धारवाड़-580007 (कर्नाटक)

भारतीय भाषाओं में रामकथा
गुजराती भाषा

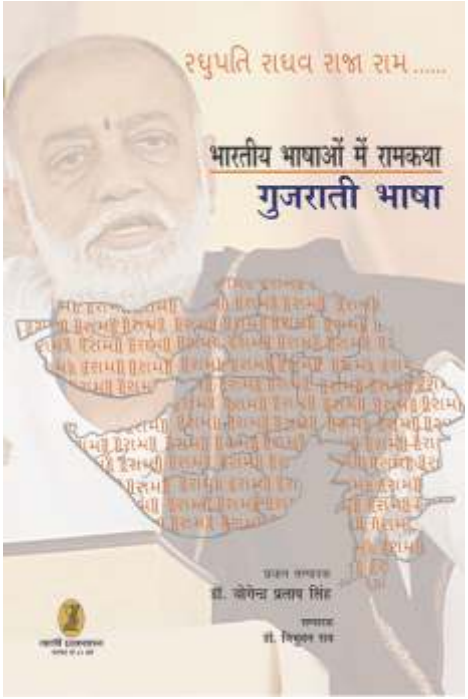

गुजराती में रामकथा की साहित्यिक परम्परा के साथ उसकी एक पुष्ट मौखिक परम्परा भी रही है। यह परम्परा जहाँ जनसाधारण और आदिवासी समाज के बीच परम्परा प्रवाह के रूप में प्राप्त होती है, वहीं रामकथा के विद्वान प्रवचनकारों के माध्यम से भी सुलभ है। आधुनिक काल के प्रभावशाली प्रवचनकारों में अहमदाबाद के निकट सोला में भागवत विद्यापीठ के संस्थापक श्री कृष्णशंकर शास्त्री, बड़ौदा के श्री रामचन्द्र केशव डोंगरे महाराज, रोहा के श्री पांडुरंग बैजनाथ आठवले, महुआ के श्री मोरारी बापू और खेड़ा जिला के दंताली आश्रम के स्वामी श्री सच्चिदानन्दजी महाराज उल्लेखनीय हैं। सौभाग्य से इनके प्रवचनों के संकलन भी सम्पादित एवं प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं। अतएव रामकथा में रुचि रखने वाले वर्तमान पाठकों के साथ भविष्य के पाठक भी इनका लाभ उठा सकते हैं।

भारतीय भाषाओं में रामकथा : गुजराती भाषा
प्रधान सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक : डॉ. त्रिभुवन राय
ISBN : 978-93-5229-054-3
मूल्य : ₹ 395
पृष्ठ संख्या : 252
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

डॉ. त्रिभुवन राय

जन्म : सन् 1936, तत्कालीन जिला बनारस (अब-भदोही) के मूसी-बृजराजपुर (उ.प्र.) के ठेठ किसान परिवेश में।
शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी.
जीवनवृत्ति : अध्यापन
पूर्व उपप्राचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, गुरुनानक खालसा कॉलेज, माटुंगा, मुम्बई-400019
स्नातकोत्तर व्याख्याता, मुम्बई विश्वविद्यालय तथा मानद आचार्य एवं शोध-निर्देशक (हिन्दी)।
सम्मान एवं पुरस्कार : अनेक राष्ट्रीय सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा समय-समय पर पुरस्कृत एवं सम्मानित।
प्रकाशित कृतियाँ : ध्वनि सिद्धान्त और हिन्दी के प्रमुख आचार्य, ध्वन्यालोक और आनन्दवर्धन, ध्वनि सिद्धान्त : प्रतिपक्ष और विकास, भारतीय काव्य सिद्धान्त एवं काव्य मीमांसा, समकालीन काव्य बोध, काव्य चिन्तन : विविध आयाम। इसके अलावा अनेक पुस्तकों का सम्पादन एवं इतर लेखन।
सम्प्रति : शोध-निर्देशन एवं स्वतन्त्र लेखन।
सम्पर्क : 2/सी-6, सेक्सरिया कम्पाउंड, मुकुन्द जाधव मार्ग, परेल विलेज, मुम्बई-400012

भारतीय भाषाओं में रामकथा राजस्थानी भाषा

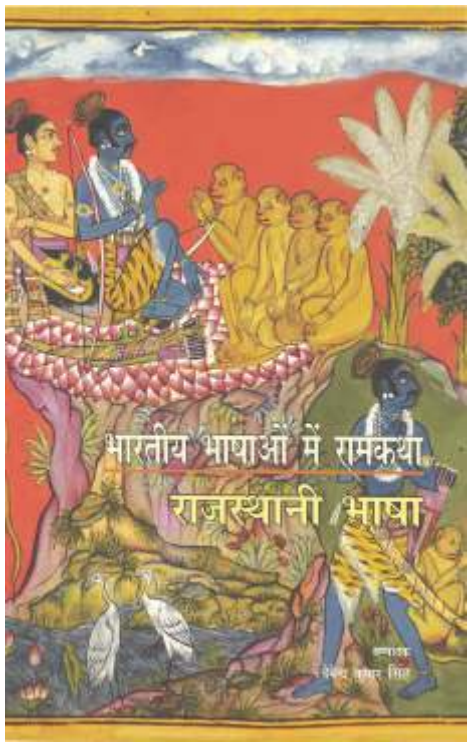

भारतीय भाषाओं में रामकथा : राजस्थानी भाषा
सम्पादक : देवेन्द्र कुमार सिंह
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2016

भारतीय संस्कृति के उज्ज्वलतम प्रतीक राम। भारतीय समाज को युगों-युगों से सम्बल प्रदान करते राम। आदि से आज तक भारतीय साहित्य में किसी-न-किसी रूप में विद्यमान राम। सभी कालों के कवियों-साहित्यकारों के आकर्षण के केन्द्र राम। नर रूप-नारायण रूप राम। पुरुष-महापुरुष-पुरुषोत्तम रूप राम। क्या कहा जाय, कितना कहा जाय, सभी कुछ राममय।

राजस्थान इससे अलग नहीं। राजस्थानी लोक-समाज और साहित्य-संस्कृति की यही स्थिति। अभिवादन परम्परा से लेकर पर्वों, उत्सवों, धार्मिक अनुष्ठानों, कलाओं, गीतों आदि सभी में रमण करते रमणीय राम।

हिन्दी-समाज तुलसीदास के रामचरितमानस के माध्यम से ही रामकथा से परिचित है उसे राजस्थानी रामकाव्यों में वर्णित रामकथा के स्वरूप में कहीं-कहीं भिन्नता भी मिलेगी। घटना-प्रसंगों के रूप वहाँ से कुछ अलग रूप में दिखाई देंगे। इसे कवियों की कल्पना मात्र कहकर नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। वस्तुत: राजस्थानी भाषा के रामकाव्यों पर संस्कृत की रामायण-परम्परा का भी काफी प्रभाव है। वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण आदि के साथ रखकर देखने पर राजस्थानी रामकाव्यों में वर्णित रामकथा के स्वरूप और घटना-प्रसंगों के रूप को आसानी के साथ समझा जा सकता है। कहीं-कहीं पर लोक-प्रभाव भी अपना प्रभाव दिखाता दिखाई पड़े तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

राजस्थानी भाषा में आधुनिक काल में भी पर्याप्त संख्या में रामकथा सम्बन्धी रचनाओं का निर्माण हुआ है। आधुनिक चिन्तन दृष्टि तथा विचारधारा के अनुरूप रामकथा सम्बन्धी विभिन्न पात्रों के चरित्रांकन तथा घटना-प्रसंगों के रूपांकन में वैसा ही परिवर्तन राजस्थानी में भी दिखाई देता है जैसा हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भाषाओं के साहित्य में।

देवेन्द्र कुमार सिंह

जन्म : 1958 ई. ग्राम-पन्थरी, जिला हमीरपुर (उ.प्र.)

शिक्षा : बी.ए., बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध राजकीय महाविद्यालय, हमीरपुर।
एम.ए., इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
पीएच.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

रिसर्च एसोसिएट : हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1983-84 ई.।

अध्यापन : नवम्बर 1984 से हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

प्रकाशन : मण्डल ग्रन्थावली; हिन्दी-रीतिकविता के परिप्रेक्ष्य में कवि मण्डल का अध्ययन; जायसी का कथा-लोक; बिहारी-सतसई : शृंगारेतर मूल्यांकन; राजा जयसिंह कृत काव्यरस।
विभिन्न पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में दो दर्जन से अधिक शोध-आलेख प्रकाशित।

शोध-निर्देशन : विशेषत: राजस्थान का अप्रकाशित/अनालोचित मध्यकालीन हिन्दी साहित्य।
12 शोधार्थी पीएच.डी. उपाधि प्राप्त।

भारतीय भाषाओं में रामकथा

शीघ्र प्रकाश्य

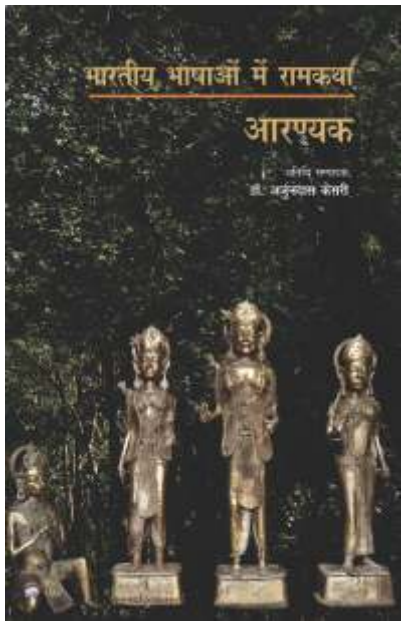

आरण्यक रामकथा
सम्पादक : डॉ. अर्जुनदास केसरी
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

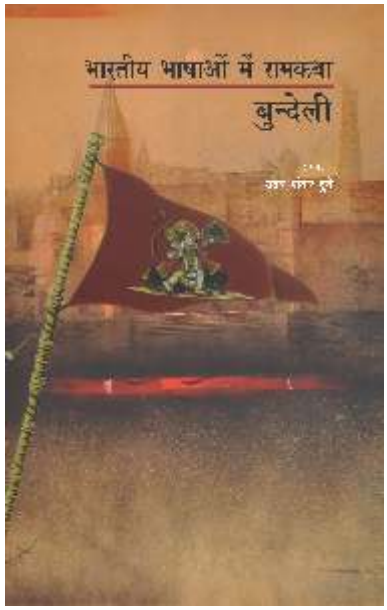

बुन्देली रामकथा
सम्पादक : उदय शंकर दुबे
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

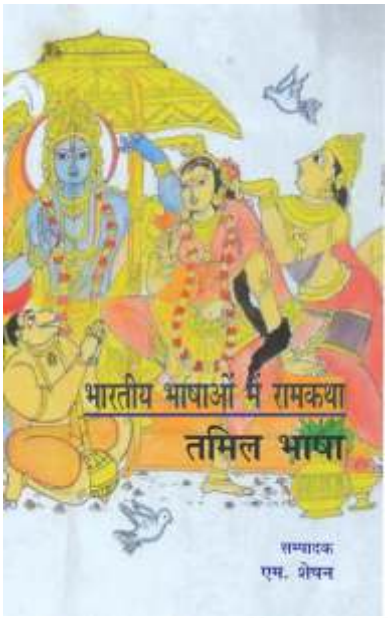

भारतीय भाषाओं में रामकथा : तमिल भाषा
सम्पादक : एम. शेषन
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

बांग्ला भाषा (मूल)
सम्पादक : डॉ. हरिश्चन्द्र मिश्र
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

रामकथा : वैश्विक सन्दर्भ

रामकथा : वैश्विक सन्दर्भ
सम्पादक : आलोक पराड़कर
ISBN : 978-93-5229-221-9
मूल्य : ₹ 395
पृष्ठ संख्या : 144 *(16 पृष्ठ रंगीन चित्रों सहित)*
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

फादर कामिल बुल्के उन विदेशी संन्यासियों में थे, जो भारत आकर भारतीयों से अधिक भारतीय हो गये थे। उन्होंने यहाँ की जनता के जीवन से अपने को एकाकार कर लिया था। उन्हें देखकर कोई भी व्यक्ति यह अनुभव कर सकता था कि संन्यास का अर्थ जीवन और जगत का निषेध न होकर स्वत्व का निषेध है और स्व का ऐसा विस्तार, जिसमें पूरी दुनिया के लिए ममत्व भरा हुआ है। वह प्रत्येक आगन्तुक से इतने स्नेह से मिलते थे कि वह अभिभूत हो जाता था। वह बारम्बार यह कहते थे कि मुझे सबसे अधिक सन्तोष तब मिलता है, जब मैं दूसरों के लिए कुछ कर पाता हूँ। ... इस प्रकार वह अहर्निश आजीवन आत्मदान-निरत थे और इस आत्मदान और लोक-सेवा का ही एक रूप उनका हिन्दी-सम्बन्धी कृतित्व था। पूर्णता और शुद्धता का आग्रह उनमें इतना अधिक था कि वह एक-एक तथ्य की प्रामाणिकता और एक-एक प्रयोग की उपयुक्तता की जाँच पर कभी-कभी घंटों परिश्रम करते थे।

वाराणसी में वर्ष 2009 से अयोध्या शोध संस्थान द्वारा किये जा रहे फादर कामिल बुल्के जयन्ती समारोहों से यह सामग्री एकत्र करते हुए सुविधानुसार इसे कुछ अध्यायों में बाँटा गया है। फादर कामिल बुल्के पर अधिक से अधिक जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध रहे इसके लिए कुछ पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों से भी सामग्री ली गयी है। वैश्विक सन्दर्भ और विदेशियों की चर्चा के साथ ही कामिल बुल्के पर आलेखों को एक स्थान पर कर दिया गया है। इसके साथ ही कामिल बुल्के की कुछ रचनाओं को भी इसमें शामिल कर लिया गया है, जो प्रायः अप्राप्य हैं और जिससे उनके कार्यों और दृष्टिकोण को समझने में आसानी होगी। जयन्ती के अवसर पर निबन्ध एवं ललित कला की प्रतियोगिताएँ भी होती रही हैं, इसके विजेताओं के निबन्ध भी इस पुस्तक में शामिल किये गये हैं।

विशेष उल्लेखनीय है कि 'रामकथा : वैश्विक सन्दर्भ' पुस्तक का मुखपृष्ठ कामिल बुल्के जयन्ती समारोह चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत चित्र है।

आलोक पराड़कर

गोरखपुर में जन्म। करीब 25 वर्षों की पत्रकारिता, पहले वाराणसी और अब लखनऊ में। *आज, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमर उजाला, जनसंदेश टाइम्स* और *कल्पतरु एक्सप्रेस* में नौकरी। समाचार संकलन एवं सम्पादन के साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता में विशेष दखल, संगीत, कला और रंगमंच पर चिन्तनपरक लेखन। विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में साक्षात्कार, समीक्षाएँ, लेख एवं टिप्पणियाँ प्रकाशित।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, गुदई महाराज, किशन महाराज, गिरिजा देवी, हरिप्रसाद चौरसिया, राजन-साजन मिश्र जैसे प्रसिद्ध कलाकारों का विशेष तौर पर सान्निध्य। पं. किशन महाराज के 80 वें जन्मदिवस पर अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन। वाराणसी के विविध पक्षों और वाराणसी के रंगमंच पर अलग-अलग पुस्तकों का सम्पादन।

दादा सम्पादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर पर राष्ट्रीय दूरदर्शन द्वारा निर्मित वृत्तचित्र क्रान्तिकारी पत्रकार तथा लखनऊ दूरदर्शन की नगर कथा में वाराणसी, बांदा, चित्रकूट नगरों पर आधारित कार्यक्रमों के लिए शोध एवं आलेख। कविताएँ भी लिखीं जो *तद्भव, नया ज्ञानोदय, लमही* में प्रकाशित। यूनेस्को एवं संस्कृति मंत्रालय की अस्पृश्य सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की संयुक्त योजना के अन्तर्गत रामलीला पर कार्य के लिए शोधवृत्ति।

सम्प्रति : लखनऊ से प्रकाशित कला, संगीत एवं रंगमंच की त्रैमासिक पत्रिका *कलासीत* के सम्पादक।

श्री रामनगर रामलीला

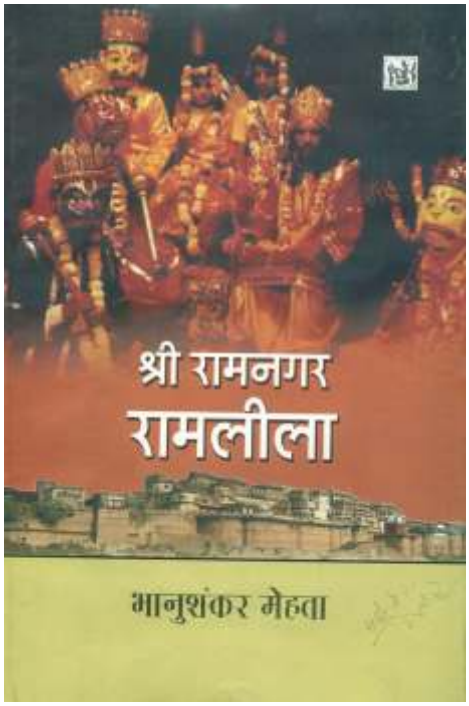

श्री रामनगर रामलीला
भानुशंकर मेहता
ISBN : 978-93-5221-058-9
मूल्य : ₹ 700
पृष्ठ संख्या : 224
साइज : 6.5" x 9.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2016

रामचरितमानस सोलहवीं सदी में पुनः कही गयी रामकथा है जिसमें राम का दर्पण रूप प्रतिबिम्बित है और यहाँ राम देवपद पर प्रतिष्ठित हो गये हैं! यहाँ राम द्विज हैं और उनकी कथा भी दो बार कही गयी।

रामकथा का एक तृतीयांश आदर्श पुरुष राम का, दूसरा तिहाई राजाराम का और अन्तिम अंश वैरागी यात्री राम का है। यहाँ रामनगर में समानान्तर अंक हैं—नगर में जहाँ सुख-सुविधा है, अविकसित ग्राम हैं और वन हैं वहीं आदिवासी, साधु-सन्त और वैरागी भी रहते हैं। रामनगर रामलीला का अद्‌भुत प्रसंग है—कोट विदाई। एक राजा द्वारा दूसरे राजा का स्वागत-सत्कार और फिर स्वरूपों को देवरूप मानकर विधिवत पूजा करता है।

रामनगर रामलीला की यात्राएँ देखें—एक तो राम जी की बारात है जो अयोध्या से जनकपुर जाती है, फिर विदाई यात्रा है जिसमें वर-वधू जनकपुर से अयोध्या आते हैं! वनयात्रा और भरत की चित्रकूट नंदीग्राम की लम्बी यात्रा है। भरत-मिलन लंका से अयोध्या की यात्रा है।

रामनगर रामलीला में लोक कला चरम उत्कर्ष पर पहुँच गयी है। लोक कला की सीमा में सौन्दर्यबोध का अपूर्व विकास हुआ है।

रामलीला—नाटक, धर्म, राजनीति और समाज की संयुक्त अवतारणा है।

रामलीला में पुराणकथा, दर्शक सहभागिता, राजनीति की माया, पर्यावरण का सभी स्तरों पर प्रदर्शन होता है।

अन्यत्र कहीं भी रामनगर का अनुकरण नहीं हो सकता, हाँ, इससे कुछ सीख सकते हैं !

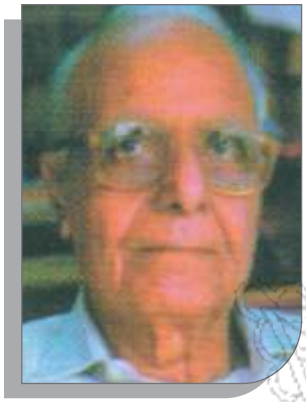

डॉ. भानुशंकर मेहता

जन्म : 25 मई, 1921, जौनपुर (उ.प्र.)।

रुचि-वृत्ति : गहरी सांस्कृतिक समझ, कुशल निदेशक, अभिनेता, सशक्त लेखक, चिकित्सा-शास्त्र के साथ-साथ अनेक स्तरीय साहित्यिक पुस्तकों/पत्रों का प्रकाशन, समर्पित रंग-अध्येता, मर्मज्ञ एवं देश में प्रचलित 'रामलीला-परम्परा' के मर्मज्ञ एवं आधिकारिक विद्वान।

अन्य सामाजिक सरोकार : रामकथा और रामलीला। काशी में अनेक वर्ष संत छोटे जी महाराज के मानस प्रतियोगिता सम्मेलन का संचालन तथा अनेक सुख्यात व्यासों के प्रवचन सुनने का अवसर। मानस संगम, कानपुर द्वारा सम्मान। वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, वड़ोदरा, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में रामलीला पर व्याख्यान। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' के संस्थापक और तीस वर्षों तक सम्पादन। विविध विषयों पर लेख और तीस पुस्तकें प्रकाशित।

निधन : 3 अक्टूबर, 2015

Perspective of
the Ramayan
in India and Southeast Asia

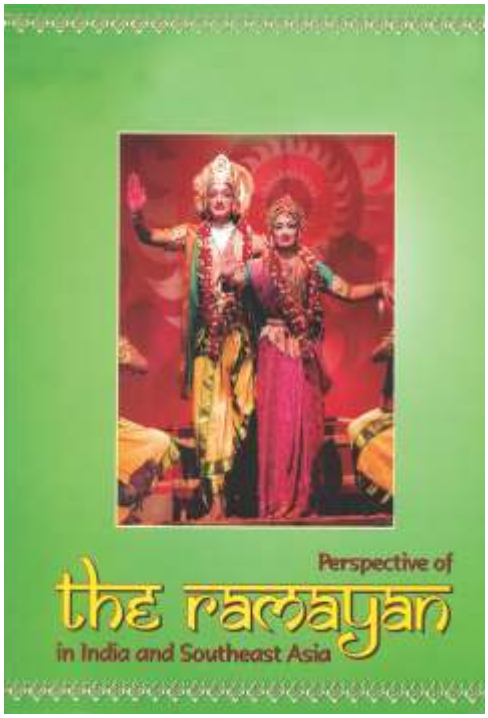

Ramayan is the story of King Ram of Ayodhya who lived in exile for 14 years, during this duration Ravan the King of Lanka kidnapped his wife Sita. Ram took help from the monkey king Sugriva, and made Hanuman and Jamwant his military supervisor and then attacked Lanka and freed Sita. Thereafter he returned with her to Ayodhya and resumed his duty as the king. This story was written thousands of years ago by Maharashi Valmiki to the name of Ramayan in poetry form in Sanskrit Language. Valmiki clarifies that he heard the story of Ram from, Kushi Lav' tribe in form of a song. Even today in Kasur district of Pakistan which is close to the city of Amritsar this story is seeing in its traditional form. The Kasur district is said to be named after Rama's son Kush and Lahore is named after his second son Lav. This is a point of intense further research.

Rama's story has a lot of importance in human life. It is the story of victory of truth over untruth, it elaborates upon human values and ethics, it is the source of all art form and cultures. The story of Ramayan may be explained in various ways and in different adjectives but it is an important cultural resource of our present times.

Perspective of the Ramayan in India and Southeast Asia
Dr. Yogendra Pratap Singh
Page No. : 96
Size : 6.25×7.25
Publisher : Ayodhya Research Institute

Power Point Presentation by Director, Ayodhya Research Institute, International Seminar at Bangkok, Thailand.

अष्टमंगल-कला प्रतीक

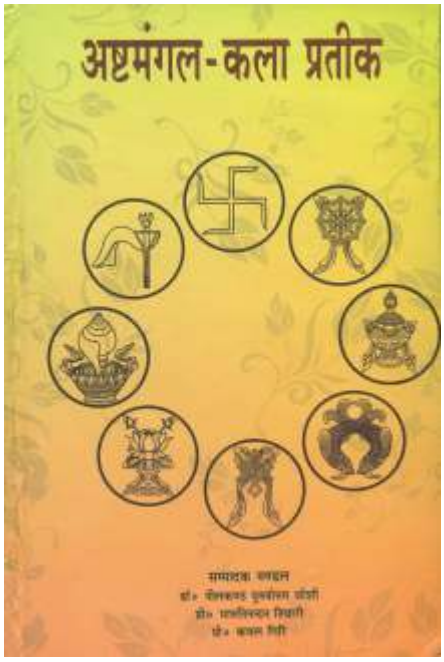

अष्टमंगल-कला प्रतीक (अंक-39)
सम्पादक : डॉ. नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी
ISNN : 2454-5465
पृष्ठ संख्या : 154
साइज : 6.0" x 9.5"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2015

भारतीय कला के वर्ण्य विषय सामाजिक जीवन दर्शन एवं विचारों के संवाहक हैं। भारतीय समाज के 'महाजन' और 'सामान्यजन' दोनों की धार्मिक मान्यताओं का समादर भारतीय कलाओं में हुआ है। ऋग्वेद में प्रतिपादित है—'रूपं-रूपं प्रतिरूपोबभूव' अर्थात् विश्व में जितने विविध रूप हैं वे सभी किसी मूल रूप के अनुसार उत्पन्न हुए हैं। एक रूप से ही सर्वरूप बना है। जो प्रतिरूप है उसकी सबसे अधिक अभिव्यक्ति प्रतीक द्वारा ही की जा सकती है। प्रतीक ही अमूर्त की सच्ची मूर्ति है। प्रतीकों के माध्यम से कला में आभ्यन्तर अर्थ और बाह्य रूप का जहाँ एक समान रमणीय विधान हुआ है वही श्रेष्ठ कला की अभिव्यक्ति है। वस्तुतः लोक और लोकोत्तर विषयों में घनिष्ठ सम्बन्ध प्रतीकों से रहा है जो मानवीय अर्थों से ऊपर दिव्य अर्थों की ओर संकेत करते हैं। वास्तविकता यह है कि एक रूप निन्दित हो सकता है परन्तु अध्यात्म या अर्थ के साथ पूजनीय बन जाता है। कला के रूपों के मूल में छिपे सूक्ष्म अर्थ का परिचय प्राप्त करने से कला की सौन्दर्यानुभूति पूर्ण और गम्भीर बनती है। प्रतीक-पूर्णता के निर्माण, उसे पहचानने में, समझने में विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करते हैं। यही भारतीय मत है।

अष्टमंगल समग्रता में जहाँ एक विचारधारा है वही एकाकी रूप से ऐसा सर्वोत्तम मांगलिक चिह्न है जो अपने भाव (प्रतिरूप) का अधिकतम परिचय देता है जिससे उसका सर्वोत्तम दर्शन समाज को प्राप्त होता है। प्रस्तुत कार्य गत वर्षों के अपेक्षाकृत गम्भीर प्रयासों का परिणाम है जिसे व्यक्तिगत सम्बन्धों के आधार पर अनुनय-विनय का पुस्तकाकार स्वरूप प्रदान किया जा सका है। यह कार्य इस दृष्टि से और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रथम दृष्ट्या मांगलिक चिह्नों के शोध एवं प्रकाशन में अपनी विशेष सहृदयता का परिचय दिया। इस कार्य में वरिष्ठ विद्वान सम्पादकों के साथ कार्य करने का अविस्मरणीय अनुभव रहा है। संकलित लेखों के विद्वानों का प्रकाशनार्थ संयम अत्यन्त प्रेरणादायक रहा है। इस कार्य में पिलुग्रिम्स पब्लिशिंग के श्री रामानन्द तिवारी एवं उनके समस्त सहयोगियों ने भी अत्यन्त संयम और लगन के साथ योगदान किया है। आशा है, जिस उद्देश्य से अष्टमंगल का संकलन प्रकाशित हो रहा है, विधाता उसे दिव्यता प्रदान करेगा।

सम्पादक—डॉ. नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी
सम्पर्क : मानद आचार्य, ज्ञान प्रवाह, सामने घाट, वाराणसी-221005 (उ.प्र.)
मोबाइल : 7525000471

Prof. Maruti Nandan Prasad Tiwari
Date of Birth : 30 Jan.1949
Education : M.A., Ph.D.
Professor Emeritus in the Department of History of Art, Banaras Hindu University, Varanasi 221 005, India.
Generel Secretary of Indian Art History Congress, Guwahati-an All India Academic Organisation of Art History. Member of UPSC.

अयोध्या की मूर्तिकला

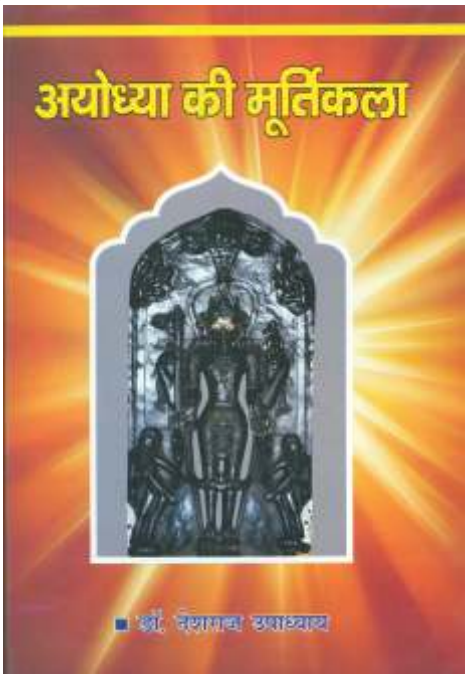

भारत वर्ष में स्थित विविध तीर्थ स्थलों में न केवल अध्यात्म एवं भक्ति की धारा प्रवाहित होती है अपितु सम्पूर्ण भारतवासी इन तीर्थों पर समागत होकर आत्मिक शान्ति का अनुभव करते हैं। इन विभिन्न तीर्थों में अयोध्या का माहात्म्य सर्वोपरि है। शास्त्रों से विदित होता है कि जिस प्रकार काशी भगवान शिव के त्रिशूल पर स्थित है उसी प्रकार अयोध्या श्री हरि विष्णु के सुदर्शन चक्र पर अवस्थित मानी जाती है। यहाँ विष्णु स्वरूप मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने जन्म लिया जिनकी विमल कीर्ति आज भी अमर है। अयोध्या की शास्त्रीय सीमा के अन्तर्गत लगभग डेढ़ सौ तीर्थ स्थल स्थित हैं।

अयोध्या की मूर्तिकला
डॉ. देशराज उपाध्याय
ISBN : 978-93-925879-7-4
मूल्य : ₹ 1295
पृष्ठ संख्या : 224 (चार रंगों में)
साइज : 6.25" x 9.5"
प्रकाशक : शृंखला पब्लिशिंग हाउस, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2015

डॉ. देशराज उपाध्याय

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग से परास्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् तत्कालीन विभागाध्यक्ष आचार्य विजय कुमार पाण्डेय के निर्देशन में 'इतिहास एवं पुरातत्व में सुलतानपुर' नामक शीर्षक पर शोधकार्य पूर्ण किया। मानक शोध प्रबन्ध होने के कारण इस ग्रन्थ को भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। क्षेत्रीय कला एवं संस्कृति में गहरी रुचि होने के कारण आपके द्वारा 'श्रीराम एवं रामसेतु' तथा 'फैजाबाद : इतिहास, कला एवं संस्कृति' नामक शोध ग्रन्थों का प्रणयन किया गया जो इतिहास के साथ-साथ पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

सम्प्रति : कोशल संग्रहालय, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में पदस्थ।
मोबाइल : 09450843261

छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में राम

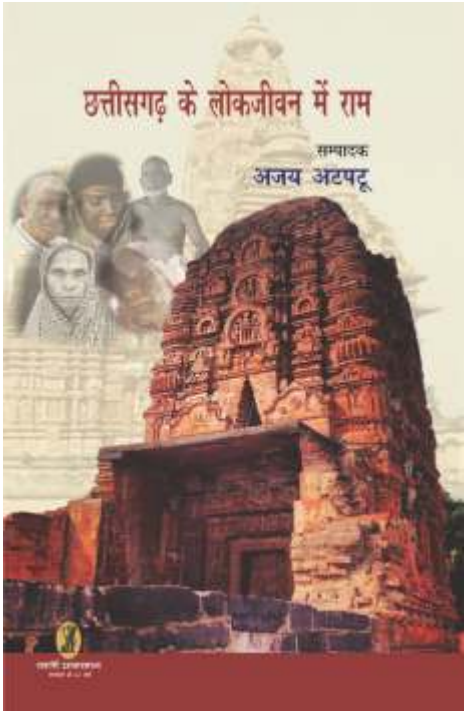

सन्त तुलसीदास के राम एक थे, दुष्टता का पर्याय रावण एक था। उस समय की रामायण बहुत सरल थी और आज की रामायण? वर्तमान की रामायण उस रामायण से कहीं ज्यादा कठिन है, यही कवि की इस "इतने राम कहाँ से लाऊँ" में दिखाई पड़ता है। और सच यही है कि "राम की एक अवधि थी निश्चित, अपने दिवस अनिश्चित हैं।"

राम के वनवास का समय तय था और हमारा वनवास अनिश्चितकालीन है। अहल्या का उद्धार भी तय समय में हो गया, हम आज तक राम के चरण को तरस रहे हैं। कितनी शबरियाँ हाथों में बेर लेकर राम का रास्ता देखते-देखते पथरा-सी गयी हैं।

रावण तो हर गली-चौराहे पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहे हैं, परन्तु राम कहीं नजर नहीं आते। कितने विवश हो गये हैं हम लोग, जो मन्दिर में राम की पूजा करते हैं और चौराहों पर रावण को नमस्ते करते हैं। वर्तमान की इस व्यथा ने मेरे मन में यथार्थ के राम को स्थापित किया—

"मुझसे मत कहना मन्दिर में जाकर शीश झुकाने को,
हार, प्रसाद चढ़ाकर घंटा, झालर, शंख बजाने को,
रामभक्त बनने से ज्यादा, बनना राम जरूरी है,
मैं आतुर हूँ उसी राम की झलक आप में पाने को।"

आखिर इतने बरस हो गये रामायण पढ़ते, रामायण को गाते लेकिन क्यों आज तक कोई राम नहीं आया। क्योंकि हमने केवल मन्दिरों की मूर्ति में राम को देखा, यथार्थ के राम को देखने का प्रयास कभी नहीं किया।

उसी राम को ढूँढ़ने का प्रयास है 'छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में राम'। आखिर उस विराट राम को ढूँढ़ने का प्रयास तो लोकजीवन से ही करना पड़ेगा। मेरे लिए इससे अच्छी बात और क्या होगी कि मैं राम को ढूँढ़ने का प्रयास वहाँ से शुरू कर रहा हूँ जहाँ राम को जन्म देने वाली माता कौशल्या का पवित्र स्थल है।

छत्तीसगढ़ के निवासियों में राम-राम, जय राम, सीताराम का अभिवादन सुनकर स्पष्ट हो जाता है कि राम कहना हमारी जिह्वा का स्वभाव है और स्वभाव इसलिए है क्योंकि राम छत्तीसगढ़ियों की आत्मा में बसे हुए हैं।

छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में राम
सम्पादक : अजय अटपटू
ISBN : 978-93-5229-093-2
मूल्य : ₹ 600
पृष्ठ संख्या : 192 (4 रंगों में)
साइज : 6.50" x 9.50"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2015

अजय अटपटू

जन्म : 01 मार्च 1977 को बागबहारा जिला-महासमुन्द (छत्तीसगढ़)

शिक्षा : स्नातक

कार्य : स्वतन्त्र लेखन

सम्पादन : 'उबलता लहू' साप्ताहिक, रायपुर एवं 'युगप्रवाह' मासिक मुम्बई का अनेक वर्ष तक सम्पादन।

विशेष : 'द ग्रेट इंडियन लॉफ्टर चैलेंज' (स्टार वन); 'हास्य कवि मुकाबला' (ज़ी स्माइल चैनल); 'वाह क्या बात है' (लाइव इंडिया चैनल); 'वाह-वाह क्या बात है' (सब टीवी) आदि में काव्य-पाठ।

'सिंपली सपने' डेली सीरियल ज़ी नेक्स्ट चैनल पर अभिनय एवं बालाजी के कुछ सीरियलों में अभिनय व हम पाँच के कुछ एपिसोड का लेखन।

देशभर के कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ व संचालन हेतु निरन्तर सक्रिय।

सम्मान : मध्यप्रदेश मित्र संघ मुम्बई द्वारा 'युवामश्री सम्मान 2000' एवं अनेक छोटे-बड़े सम्मान।

अन्य : समय-समय पर आकाशवाणी व दूरदर्शन के साहित्यिक कार्यक्रमों का संचालन।

सम्पर्क : वार्ड नं.-4, थाना पारा, बागबहारा, जिला-महासमुन्द-493449 (छत्तीसगढ़)

राम साहित्य कोश-1

'अ से य'

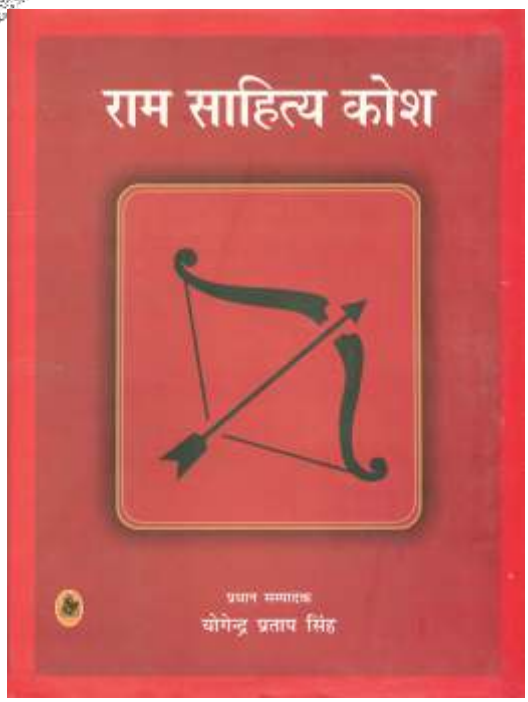

यह कोश केवल एक सन्दर्भ कोश मात्र नहीं है। यह समग्र भारत की राष्ट्रीय रागात्मक एकता का स्वयं में वृहत्तर तथा व्यापक साक्ष्य है। आप कल्पना करें, उस कालखंड की, जब भारत की समृद्धि एवं अखंडता पर विदेशी हमले शुरू हुए। प्रारम्भिक स्थिति में शक, हूण, किरात, खस, आभीर, यूनानी शक्तियों के भारत पर हमले हुए—जिनमें से कुछ तो भाग गये और कुछ हम भारतीयों के बीच रहते हुए पूरी तरह से भारतीय बन गये। इन सबके बावजूद, हमारा अपना भारत अभी तक अपने सांस्कृतिक सन्दर्भों की नींवों पर अडिग है। रामसाहित्य इसी अडिगता का साक्ष्य है। रामसाहित्य कोश की इस प्रस्तुति का मन्तव्य भी यही है कि हम एक बार फिर अपनी भारतीय संस्कृति के त्यागवाद, परोपकारवाद, आस्थावादी अस्मिता को सबके सामने प्रस्तुत करके उन्हें इन मूल्यों से जोड़ने के लिए पुनः प्रेरित करें।

कोश के सहयोगी लेखक

डॉ. अनुज प्रताप सिंह • डॉ. आई.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी • श्री आदर्श मिश्र • डॉ. इन्दु के. बी. • डॉ. उदयशंकर दुबे • डॉ. ए.के. विन्दु • डॉ. एन.जी. देवकी • डॉ. एम. शेषन् • डॉ. कीर्ति कुमार सिंह • डॉ. जयप्रभा सी.एस. • डॉ. टी. एम्बिली • डॉ. टी.आर.भट्ट • डॉ. देवेन्द्र • श्री नन्दल हितैषी • डॉ. नन्दिता सिंह • डॉ. निधि सिन्हा • डॉ. परमेश्वरी शर्मा • डॉ. पद्मा पाटिल • डॉ. पुष्पा रानी • डॉ. पुष्पा सिंह • श्री प्रदीप कुमार सिंह • डॉ. प्रभाकर सिंह • डॉ. प्रीति शाह • डॉ. बाबूराम • डॉ. ममता शुक्ला • डॉ. मौसमी खेड़ा • श्री शिवशंकर त्रिपाठी • डॉ. शिवानी पाण्डेय • डॉ. शैलजा श्यामा (पाटील) • डॉ. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी • डॉ. संजय कुमार सिंह • डॉ. सभापति मिश्र • डॉ. सरोज सिंह • डॉ. सुजीत कुमार शर्मा • डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय • डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित • डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी • डॉ. त्रिभुवन राय

राम साहित्य कोश-1 *'अ से य'*
सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-267-2495-6
मूल्य : ₹ 2000 (दो खंडों का संयुक्त मूल्य)
पृष्ठ संख्या : 796
साइज : 7.5" x 9.75"
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2014

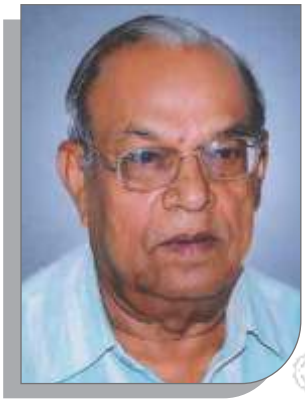

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक—पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका—भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस —सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश — भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा—भारतीय पक्ष काव्यभाषा—अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

राम साहित्य कोश-2

'र से ह'

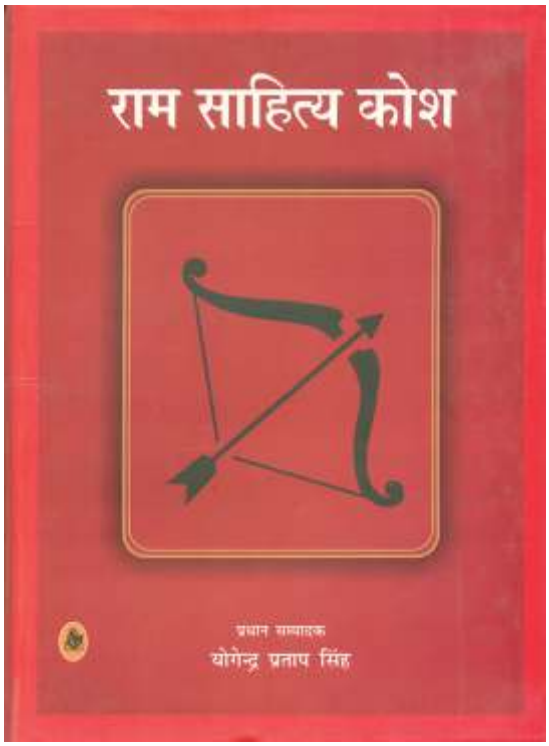

यह कोश केवल एक सन्दर्भ कोश मात्र नहीं है। यह समग्र भारत की राष्ट्रीय रागात्मक एकता का स्वयं में वृहत्तर तथा व्यापक साक्ष्य है। आप कल्पना करें, उस कालखंड की, जब भारत की समृद्धि एवं अखंडता पर विदेशी हमले शुरू हुए। प्रारम्भिक स्थिति में शक, हूण, किरात, खस, आभीर, यूनानी शक्तियों के भारत पर हमले हुए—जिनमें से कुछ तो भाग गये और कुछ हम भारतीयों के बीच रहते हुए पूरी तरह से भारतीय बन गये। इन सबके बावजूद, हमारा अपना भारत अभी तक अपने सांस्कृतिक सन्दर्भों की नींवों पर अडिग है। राम साहित्य इसी अडिगता का साक्ष्य है। राम साहित्य कोश की इस प्रस्तुति का मन्तव्य भी यही है कि हम एक बार फिर अपनी भारतीय संस्कृति के त्यागवाद, परोपकारवाद, आस्थावादी अस्मिता को सबके सामने प्रस्तुत करके उन्हें इन मूल्यों से जोड़ने के लिए पुनः प्रेरित करें।

कोश के सहयोगी लेखक

डॉ. अनुज प्रताप सिंह • डॉ. आई.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी • श्री आदर्श मिश्र • डॉ. इन्दु के. बी. • डॉ. उदयशंकर दुबे • डॉ. ए.के. विन्दु • डॉ. एन.जी. देवकी • डॉ. एम. शेषन् • डॉ. कीर्ति कुमार सिंह • डॉ. जयप्रभा सी.एस. • डॉ. टी. एम्बिली • डॉ. टी.आर.भट्ट • डॉ. देवेन्द्र • श्री नन्दल हितैषी • डॉ. नन्दिता सिंह • डॉ. निधि सिन्हा • डॉ. परमेश्वरी शर्मा • डॉ. पद्मा पाटिल • डॉ. पुष्पा रानी • डॉ. पुष्पा सिंह • श्री प्रदीप कुमार सिंह • डॉ. प्रभाकर सिंह • डॉ. प्रीति शाह • डॉ. बाबूराम • डॉ. ममता शुक्ला • डॉ. मौसमी खेड़ा • श्री शिवशंकर त्रिपाठी • डॉ. शिवानी पाण्डेय • डॉ. शैलजा श्यामा (पाटील) • डॉ. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी • डॉ. संजय कुमार सिंह • डॉ. सभापति मिश्र • डॉ. सरोज सिंह • डॉ. सुजीत कुमार शर्मा • डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय • डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित • डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी • डॉ. त्रिभुवन राय

राम साहित्य कोश-2 *'र से ह'*
सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-267-2495-6
मूल्य : ₹ 2000 (दो खंडों का संयुक्त मूल्य)
पृष्ठ संख्या : 796
साइज : 7.5" x 9.75"
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2014

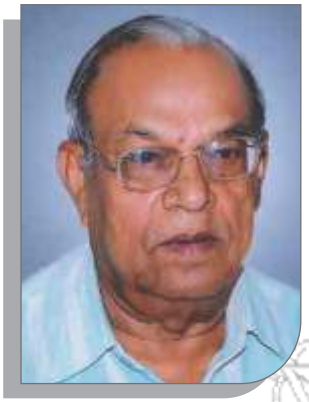

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक—पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका—भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस —सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश — भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा—भारतीय पक्ष काव्यभाषा—अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

खबरें खुद बोलती हैं...

रघुनाथ गाथा-1

लखनऊ कानपुर इलाहाबाद

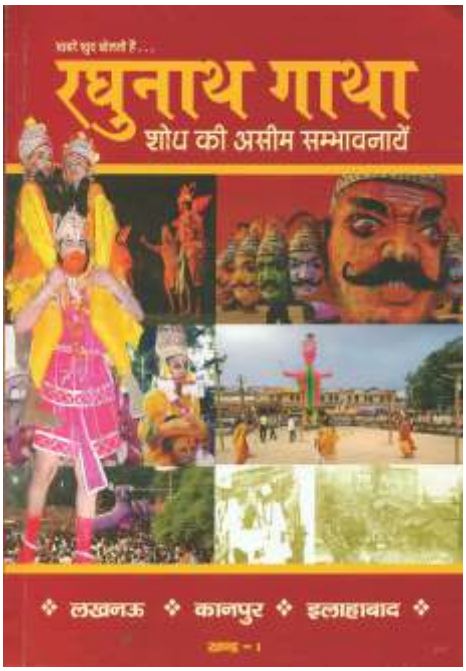

खबरें खुद बोलती हैं...रघुनाथ गाथा -1
मूल्य : ₹ 600
पृष्ठ संख्या : 224
साइज : 8.5" x 11"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2011

हमारे जीवन में समाचार-पत्रों का बहुत महत्व है, परन्तु उसके प्रभाव की अवधि अत्यन्त सीमित है। सुबह-सवेरे एक बार पढ़ने के बाद जब हम अपने दैनिक कार्यों में लग जाते हैं, तब इनको फिर-फिर पढ़ना बेमानी लगता है, और दूसरे दिन फिर नया अखबार नये-नये समाचार...।

समाचार-पत्र-प्रतिनिधि से लेकर उसका पूरा तन्त्र अपने सामाजिक सरोकारों से बड़ी मेहनत से समाचारों के संकलन तथा प्रकाशन के कार्यों में लगा रहता है। विषय-विशेष पर यदि समाचारों का संकलन किया जाय तो न केवल समाचारों को, घटनाओं को एक विशेष दृष्टि प्राप्त होगी, अपितु समय के दस्तावेज भी बन सकेंगे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं की अनसुलझी गुत्थी इन्हीं समाचार-पत्रों के आईने से देखी जा सकेगी।

ऐसा ही एक अनूठा और शायद विश्व में भी पहला प्रयास किया गया है कि केवल समाचार-पत्रों की कतरन की एक किताब बना दी जाय।

दशहरे के समय देश के विभिन्न शहरों में प्रकाशित होने वाले समाचारों का वर्ष 2009 में किया गया संकलन आपके सम्मुख प्रस्तुत है—कृपया अपनी बेबाक टिप्पणी अवश्य प्रेषित करें। अन्य वर्षों की भी संकलित की जा रही है।

विश्व की अमूर्त धरोहर की श्रेणी में भारत की अत्यन्त प्राचीन पारम्परिक नाट्य विधा रामलीला सम्मिलित है। रामलीला के उद्भव के सन्दर्भ में भी वैसी ही बातें प्रकाश में आती हैं जैसी रामकथा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रचलित हैं। रामकथा वाल्मीकि की रामायण से ही आगे बढ़ती है और विभिन्न भाषाओं, बोलियों से प्रवाहित होते हुए आज भी एकदम ताजी, टटकी, जीवन मूल्यों से ओतप्रोत भविष्य की प्रेरणा हेतु उदाहरण के रूप में हमारे समक्ष है।

भारत सरकार संगीत नाटक अकादमी से प्राप्त सहयोग से प्रकाशित

खबरें खुद बोलती हैं...

रघुनाथ गाथा-2

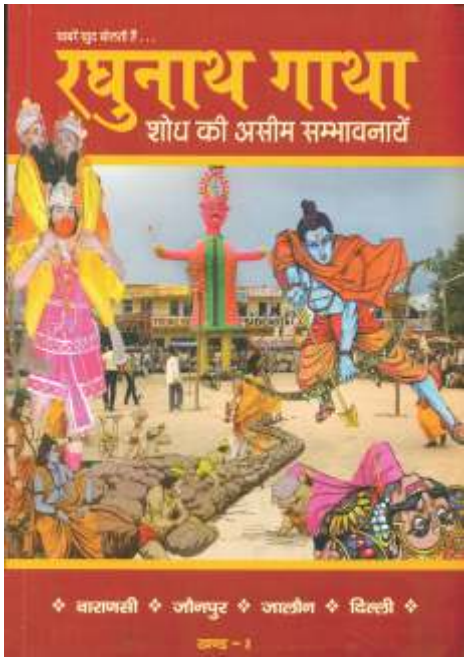

खबरें खुद बोलती हैं...रघुनाथ गाथा-2
मूल्य : ₹ 600
पृष्ठ सख्या : 208
साइज : 8.5" x 11"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2011

भारत सरकार संगीत नाटक अकादमी से प्राप्त सहयोग से प्रकाशित

वाराणसी जौनपुर जालौन दिल्ली

हमारे जीवन में समाचार-पत्रों का बहुत महत्व है, परन्तु उसके प्रभाव की अवधि अत्यन्त सीमित है। सुबह-सवेरे एक बार पढ़ने के बाद जब हम अपने दैनिक कार्यों में लग जाते हैं, तब इनको फिर-फिर पढ़ना बेमानी लगता है, और दूसरे दिन फिर नया अखबार नये-नये समाचार...।

समाचार-पत्र-प्रतिनिधि से लेकर उसका पूरा तन्त्र अपने सामाजिक सरोकारों से बड़ी मेहनत से समाचारों के संकलन तथा प्रकाशन के कार्यों में लगा रहता है। विषय-विशेष पर यदि समाचारों का संकलन किया जाय तो न केवल समाचारों को, घटनाओं को एक विशेष दृष्टि प्राप्त होगी, अपितु समय के दस्तावेज भी बन सकेंगे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं की अनसुलझी गुत्थी इन्हीं समाचार-पत्रों के आईने से देखी जा सकेगी।

ऐसा ही एक अनूठा और शायद विश्व में भी पहला प्रयास किया गया है कि केवल समाचार-पत्रों की कतरन की एक किताब बना दी जाय।

दशहरे के समय देश के विभिन्न शहरों में प्रकाशित होने वाले समाचारों का वर्ष 2009 में किया गया संकलन आपके सम्मुख प्रस्तुत है—कृपया अपनी बेबाक टिप्पणी अवश्य प्रेषित करें। अन्य वर्षों की भी संकलित की जा रही है।

विश्व की अमूर्त धरोहर की श्रेणी में भारत की अत्यन्त प्राचीन पारम्परिक नाट्य विधा रामलीला सम्मिलित है। रामलीला के उद्भव के सन्दर्भ में भी वैसी ही बातें प्रकाश में आती हैं जैसी रामकथा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रचलित हैं। रामकथा वाल्मीकि की रामायण से ही आगे बढ़ती है और विभिन्न भाषाओं, बोलियों से प्रवाहित होते हुए आज भी एकदम ताजी, टटकी, जीवन मूल्यों से ओतप्रोत भविष्य की प्रेरणा हेतु उदाहरण के रूप में हमारे समक्ष है।

घट रामायण

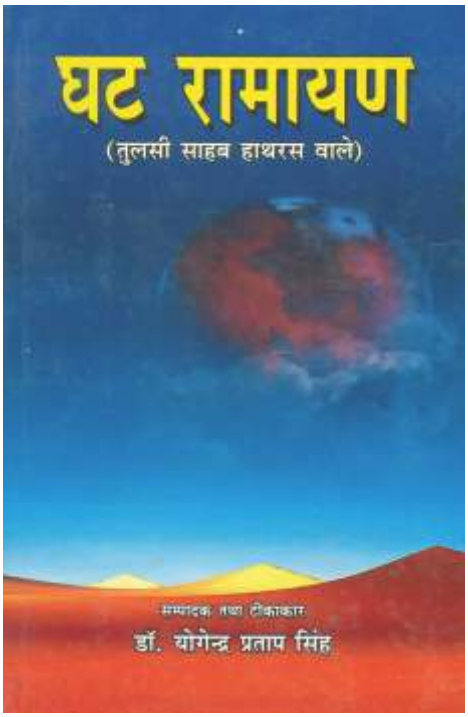

संत तुलसी साहब कृत 'घट रामायण' 19वीं सदी की वह अद्‌भुत कृति है, जो एक बार पुनः उस युग में व्याप्त सम्पूर्ण धार्मिक आडम्बरों को पूरी प्रतिबद्धता के साथ विनष्ट करके पाठकों में परम तत्व के ज्ञान के प्रति नयी समझ उत्पन्न करती है। सन्त मत की सैद्धान्तिक साधना के गूढ़ मर्म में प्रवेश करके उससे सम्बद्ध रहस्यों की व्याख्या यहाँ तार्किक, स्पष्ट, मर्मस्पर्शी तथा बोधगम्य बनाकर समझाना इस कृति का मूल मन्तव्य है। आध्यात्मिक साधना तथा भारतीय धार्मिक लोकजीवन की रचना के अद्‌भुत समन्वय से सम्पृक्त यह कृति आज न केवल भारतीय अध्यात्म परम्परा की एक गम्भीर साक्ष्य है, अपितु समाज के लिए मार्ग दर्शन का भी कार्य करती है।

घट रामायण
सम्पादक तथा टीकाकार : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
मूल्य : ₹ 300
पृष्ठ संख्या : 620
साइज : 7" x 10.5"
प्रकाशक : बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स
प्रकाशन वर्ष : 2009

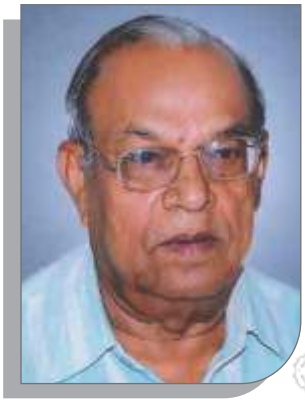

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

लीला और भक्तिरस

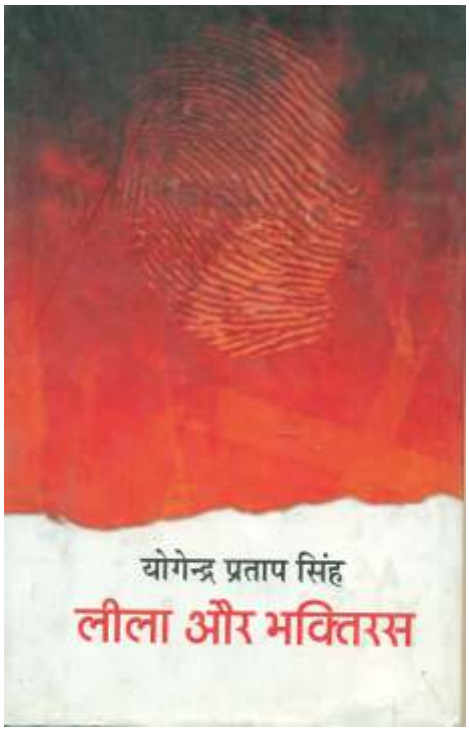

लीला के विवेचन के बिना हिन्दी भक्ति कविता की समीक्षा सम्भव नहीं है। लीला भक्तिरस का प्राण है। हिन्दी के आलोचकों में लगभग आठ दशकों से हिन्दी वैष्णव भक्तिकाव्य की समीक्षा शुरू की, किन्तु उनका ध्यान इस प्राणवान तत्व की ओर नहीं जा सका है। प्रायः अंग्रेजी साहित्य से सम्बद्ध सिद्धान्तों तथा प्राकृत लोक मान्यताओं के प्रकाश में भक्ति कविता की अब तक जो समीक्षाएँ हुई हैं, उनसे इस विशाल साहित्य की मूल प्रकृति स्पष्ट नहीं हो सकी है। इसका मुख्य कारण यह है कि भक्तिकाव्य के अध्यात्म एवं लोक का द्वन्द्व केवल लीला एवं मात्र लीला के माध्यम से ही विवेचित होना सम्भव है। उसके मन्तव्य, अर्थ-रचना एवं भावद्वन्द्व को इस लीलाधार के अभाव में देखा जाना इस भारतीय कविता के साथ अन्याय है। भक्तिरस इसी लीलाधर्मिता की निष्पत्ति है। आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल जैसे भक्तिकविता के प्रख्यात समीक्षक भी भक्तिकाव्य की इस मूल अवधारणा से अपनी दृष्टि बचाकर दूसरी ओर जाते दिखाई पड़ते हैं।

लीला और भक्तिरास
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-8031-833-7
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 168
साइज : 5.75" x 8.75"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
पकाशन वर्ष : 2014

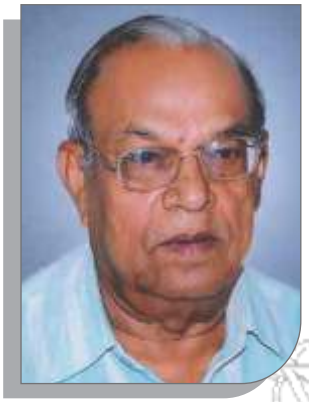

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा

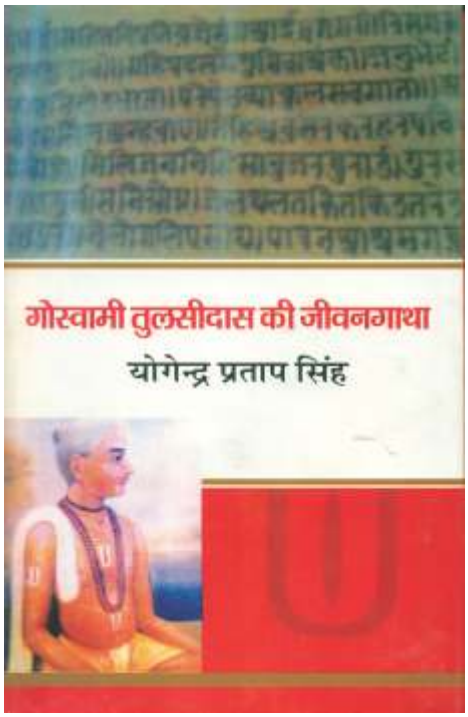

गोस्वामी तुलसीदास का जीवन चरित प्रायः उनके जीवनकाल से ही लिखा जाता रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने अपनी दीर्घायु के बीच पर्याप्त ख्याति अर्जित कर ली थी और मुगल सम्राट अकबर, राजा मानसिंह, अब्दुल रहीम खानखाना, मीराबाई, राजा टोडरमल आदि ने उनकी श्रीरामभक्ति के प्रति पर्याप्त श्रद्धा और सम्मान अर्जित किया था। साहित्य की परम्परा में उनकी कालजयी कृति श्रीरामचरितमानस की चर्चा भक्ति एवं रीतिकाल से ही बराबर होती चली रही है।

गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-8031-272-4
मूल्य : ₹ 250
पृष्ठ संख्या : 200
साइज : 5.5" x 8.75"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2008

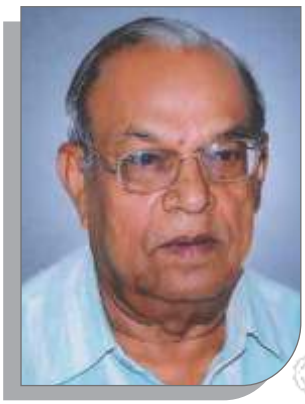

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

गोस्वामी तुलसीदास कृत

राममचरितमानस

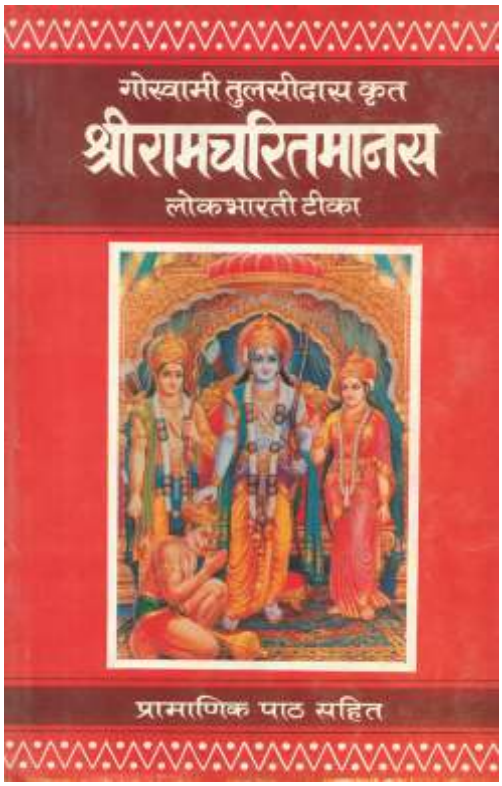

श्रीरामचरितमानस भारतीय संस्कारों का श्रेष्ठतम महाकाव्य है। भारतीय संस्कार का अर्थ है, समग्र मानव जाति के निखिल मंगल, कल्याण एवं हितैषिता के प्रति समर्पित होकर प्रेम, स्नेह, उदारता, ममता, सहिष्णुता, दया, अस्तित्व, अहिंसा, सत्य, परोपकार आदि मूल्यों की प्रतिष्ठा करना। इस प्रकार, मानस मानव अस्तित्व को सर्वोपरि मानकर उसके लिए सबसे सुलभ, सर्वाधिक सुगम तथा श्रेयस्कर मार्ग की तलाश की छटपटाहट से संयुक्त है। इस प्रकार श्रीरामचरितमानस निखिल मानव जाति की सनातन धरोहर है और इस टीका का मन्तव्य है, उसकी इस अमूल्य तथा परम शुभमयी धरोहर से उसे बराबर परिचित कराते रहना।

श्रीरामचरितमानस
सम्पादक : डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-81-8031-648-7
मूल्य : ₹ 1000
पृष्ठ संख्या : 986
साइज : 7" x 10.75"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2013

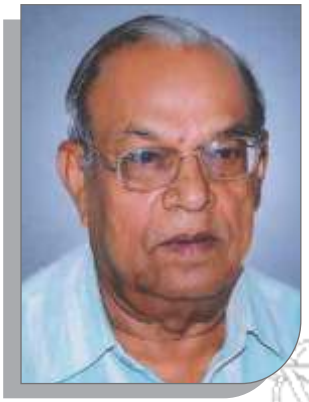

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक–पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष–हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस –सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश – भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा–भारतीय पक्ष काव्यभाषा–अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

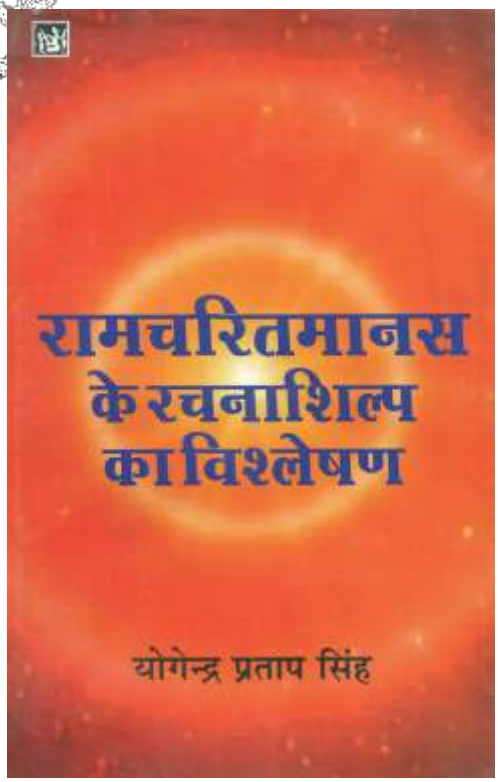

रामचरितमानस
के रचनाशिल्प का विश्लेषण

रामकथा से सम्बद्ध विविध युग सापेक्ष कृतियाँ मानव मूल्यों एवं साहित्यिक मानकों के बदलावों के फलस्वरूप निरन्तर बदलती रही हैं। परम्परा की प्रमुख रामकथा से सम्बद्ध कृतियों यथा वाल्मीकि रामायण-अध्यात्म रामायण एवं रामचरितमानस आदि को केन्द्र में रखकर देखा जाये तो रामकाव्य के कथाशिल्प एवं रचनाविधान में परिवर्तन सामाजिक मूल्यों के बदलाव के कारण आये हैं और उनमें इस दृष्टि से शाश्वतता की तलाश का कोई अर्थ नहीं है।

'रामचरितमानस के रचनाशिल्प का विश्लेषण' शीर्षक कृति इसी युग सापेक्ष्य परिवर्तन की मौलिकता से सम्बद्ध है और यह मौलिकता परम्परा से नहीं कवि की सर्जन सामर्थ्य से सम्बद्ध है।

गोस्वामी तुलसीदास की अजेय कृति श्रीरामचरितमानस की रचनासामर्थ्य की मौलिकता का विश्लेषण परम्परा से मुक्त होकर करना—इस कृति का मन्तव्य है—जिससे एक कालजयी मौलिक रचनाधर्मिता से सम्बद्ध कवि को भविष्य में परम्परावादी कहकर उसकी प्रतिभा पर प्रश्न-चिह्न न लगाया जा सके।

रामचरितमानस के रचनाशिल्प का विश्लेषण
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
ISBN : 978-93-5229-009-1
मूल्य : ₹ 500
पृष्ठ संख्या : 200
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2015

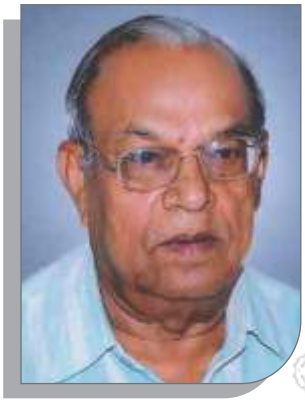
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक—पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
पूर्व अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी एकेडमी

आलोचनात्मक साहित्य : हिन्दी वैष्णव भक्ति काव्य में निहित काव्यादर्श और काव्य शास्त्रीय सिद्धान्त; लीला और भक्ति रस; भारतीय काव्यशास्त्र; भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा; काव्यांग परिचय; सर्जन और रसास्वादन; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना; भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अनुशीलन; इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास की समस्याएँ।

कबीर की कविता, सूर, तुलसीदास, मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण, तुलसी के रचना वैविध्य का विवेचन, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : निबन्ध संरचना और सैद्धान्तिक चिन्तन।

सर्जनात्मक साहित्य : बनते गाँव टूटते रिश्ते; देवकी का आठवाँ बेटा; अन्धी गली की रोशनी; गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा (उपन्यास) गीति अर्द्धशती; बीती शती के नाम; उर्वशी; गाधि पुत्र; सागर गाथा तथा अन्य कविताएँ।

सम्पादन तथा टीका–भक्तिकाल : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस —सम्पूर्ण; विनय पत्रिका; कवितावली; बालकाण्ड; अयोध्याकाण्ड; सुन्दरकाण्ड; लंकाकाण्ड; उत्तरकाण्ड (पृथक-पृथक भूमिका लेखन तथा सम्पादन)

रीतिकाल : करुणाभरण नाटक (लच्छीराम कृत); जोरावर प्रकाश (सूरति मिश्र, रसिकप्रिया की टीका); कृष्णचन्द्रिका (वीर कवि कृत)

संयुक्त लेखन : हिन्दी साहित्य कोश — भाग : 1 तथा 2, हिन्दी साहित्य-खण्ड-3, काव्यभाषा—भारतीय पक्ष काव्यभाषा—अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ; रस-छन्द-अलंकार।

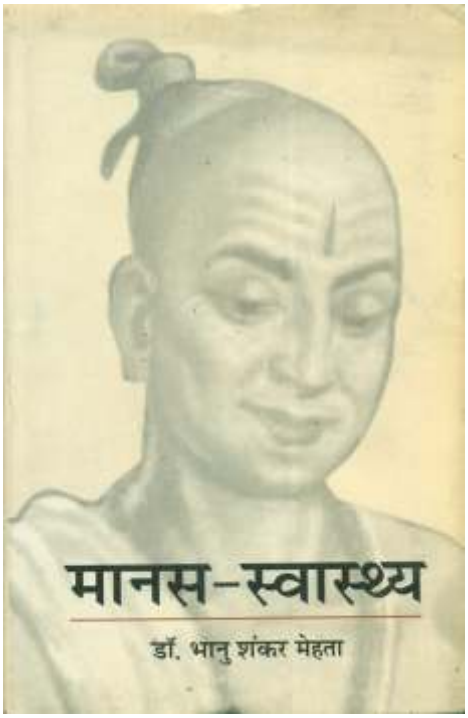

मानस-स्वास्थ्य

मानव कल्याण के लिए सागर मंथन कर अमृत संचय करने जैसा कार्य किया है, डॉ. भानु शंकर मेहता जी ने। गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस का गहन अध्ययन, चिन्तन एवं मनन कर उसमें स्वास्थ्य-जागरूकता के निहितार्थ विचारों को बहुत बारीकी से प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक हमें सार्थक और स्वास्थ्य जीवन जीने की कला सिखाती है, साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों से भी परिचय कराती है। निःसन्देह यह एक प्रेरणादायक अति महत्त्वपूर्ण कृति है।

मानस-स्वास्थ्य
डॉ. भानुशंकर मेहता
ISBN : 81-904239-4-0
मूल्य : ₹ 130
पृष्ठ संख्या : 132
साइज : 5.75" x 8.75"
प्रकाशक : भारतीय पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रब्यूटर्स, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2008

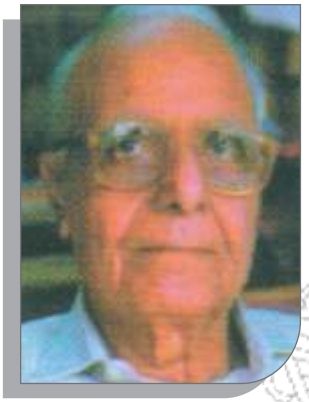

डॉ. भानुशंकर मेहता

जन्म : 25 मई, 1921, जौनपुर (उ.प्र.)।

रुचि-वृत्ति : गहरी सांस्कृतिक समझ, कुशल निदेशक, अभिनेता, सशक्त लेखक, चिकित्सा-शास्त्र के साथ-साथ अनेक स्तरीय साहित्यिक पुस्तकों/पत्रों का प्रकाशन, समर्पित रंग-अध्येता, मर्मज्ञ एवं देश में प्रचलित 'रामलीला-परम्परा' के मर्मज्ञ एवं आधिकारिक विद्वान।

अन्य सामाजिक सरोकार : रामकथा और रामलीला। काशी में अनेक वर्ष संत छोटे जी महाराज के मानस प्रतियोगिता सम्मेलन का संचालन तथा अनेक सुख्यात व्यासों के प्रवचन सुनने का अवसर। मानस संगम, कानपुर द्वारा सम्मान। वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, वड़ोदरा, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में रामलीला पर व्याख्यान। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' के संस्थापक और तीस वर्षों तक सम्पादन। विविध विषयों पर लेख और तीस पुस्तकें प्रकाशित।

निधन : 3 अक्टूबर, 2015

तुलसी-दल

आयुर्वेद में तो तुलसी की बड़ी महिमा कही गयी है और अनेक औषधियों का अनुपान तुलसी का रस ही होता है। शायद तुलसी से पवित्र कोई और वृक्ष हो। क्यों न हो वह जगदीश की पत्नी जो है।

तुलसी-दल
डॉ. भानुशंकर मेहता
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ : 334
साइज : 5.75" x 9.00"
प्रकाशक : रत्ना पब्लिकेशन्स, वाराणसी
प्रकाशन वर्ष : 2009

आज भानुशंकर मेहता हमारे बीच नहीं हैं पर इस पुस्तक की भूमिका में लिखे गये शब्द स्वयं अपनी बात कह देंगे।

'तुलसी-दल' आपके हाथ में है। शायद इस तुलसीवन में आपको कुछ उपयोगी लगे तो उसे ग्रहण करें, अन्यथा इसे कचरा समझकर फेंकें नहीं किसी को दे दें।

एक अकिंचन मूढ़ अज्ञानी ने इसे लिखा है ऐसा भ्रम नहीं है, प्रभुराम की कृपा बजरंग बली की सहायता और गोस्वामी तुलसीदास की प्रेरणा से भी यह लिखा गया। फिर भी इसमें दोष होंगे। अनेक भूलें होंगी। एक दोष तो पुनरावृत्ति का है, 'भाँति अनेक बार बहुबरनी' पर यह तो कथा है, जयमाला है, बारम्बार दुहराना तो है ही। तिस पर भी रामकथा मर्मज्ञ मुझे क्षमा कर देंगे, यह रामदरबार में मेरी बालक्रीड़ा है, लड़िका जो कछु अनुचित करहीं मानकर मन में नहीं लायेंगे। आपकी पनही मेरे सिर पर है।

कुछ विद्वानों के लेख इसमें शामिल किये हैं, वे भी जिनके लेखकों के नाम नहीं मिले। दुस्साहस किया है, क्षमा प्रार्थी हूँ, पर मुझे अच्छे लगे और लगा कि इनसे संग्रह की शोभा बढ़ेगी इसलिए शामिल कर लिया।

मैं तो निमित्त मात्र हूँ—जो हुआ प्रभु की इच्छा और कृपा से अतः उन चरणों में प्रणिपात हूँ।

—अकिचन-लेखक वनही दास

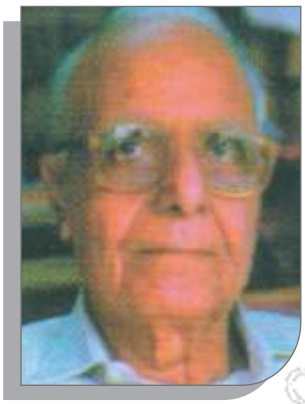

डॉ. भानुशंकर मेहता

जन्म : 25 मई, 1921, जौनपुर (उ.प्र.)।

रुचि-वृत्ति : गहरी सांस्कृतिक समझ, कुशल निदेशक, अभिनेता, सशक्त लेखक, चिकित्सा-शास्त्र के साथ-साथ अनेक स्तरीय साहित्यिक पुस्तकों/पत्रों का प्रकाशन, समर्पित रंग-अध्येता, मर्मज्ञ एवं देश में प्रचलित 'रामलीला-परम्परा' के मर्मज्ञ एवं आधिकारिक विद्वान।

अन्य सामाजिक सरोकार : रामकथा और रामलीला। काशी में अनेक वर्ष संत छोटे जी महाराज के मानस प्रतियोगिता सम्मेलन का संचालन तथा अनेक सुख्यात व्यासों के प्रवचन सुनने का अवसर। मानस संगम, कानपुर द्वारा सम्मान। वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, वड़ोदरा, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में रामलीला पर व्याख्यान। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' के संस्थापक और तीस वर्षों तक सम्पादन। विविध विषयों पर लेख और तीस पुस्तकें प्रकाशित।

निधन : 3 अक्टूबर, 2015

अयोध्या की रामलीला

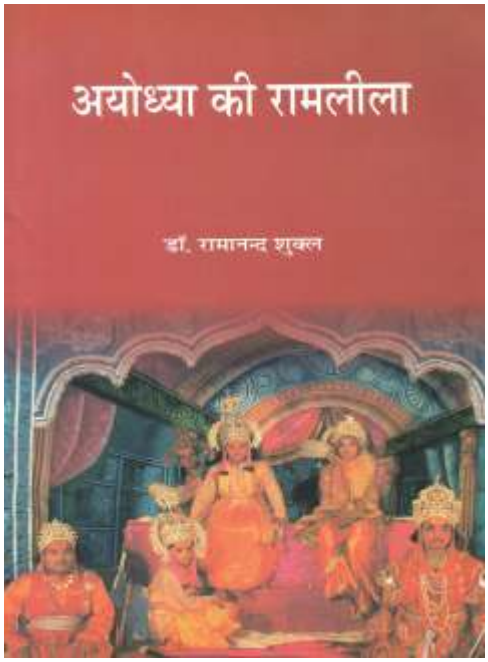

अयोध्या में रामलीला की परम्परा का प्रवर्द्धन स्वामी-सेवक, सेव्य, भक्ति-भक्त-भगवन्त और सामीप्य-सायुज्य का सुन्दरतम संवाहक सिद्ध होता है। दर्शकों का दृश्यानुसार हँसना-रोना, अविरल अश्रुपात होना, कारुणिक दृश्यों-रसों की सहज सम्प्रेषणशीलता-भावविह्वलता, साङ्गीतिक-सांवादिक शैली में अभिनीत रामलीला की संसिद्धि-लोकग्राह्यता को प्रामाणिक-प्रतिष्ठित करती है। श्रद्धालु दर्शक के मन-मस्तिष्क को पूर्ण रूप से आप्यायित करती है। निर्झारित रसबोध से वातावरण में एक अद्भुत गाम्भीर्य, उनकी भक्ति-भावना का विस्तार-प्रसार होता है। हिन्दू जनमानस के हृदय पर तुलसी की कालजयी रचना से प्रसूत यह जनता-जनार्दन के लिए 'भवभय-अंजनि, जनमन-रंजनि' है रामलीला!

अयोध्या की रामलीला
डॉ. रामानन्द शुक्ल
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 134
साइज : 7.25" x 9.75"
प्रकाशक : भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2007

डॉ. रामानन्द शुक्ल

प्रकाशित कृतियाँ
रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, शिवासपादशतक (भक्तिकाव्य)
दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, आज, जनमोर्चा, दैनिक जिम्मेदार, राष्ट्रीय सहारा, अवध कमेंट वीक, धर्मायण, मानसमुक्तामणि, तुलसीदल, मानसमणि, वैराग्य-ज्योति, अवध-अर्चना, साकेत-सुधा आदि पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर बहुतशः लेख और कविताएँ प्रकाशित।

सम्पर्क सूत्र : कालिकुलालालय-तन्त्रसाधना-शोध-शक्तिपीठम्
निकट क्षेत्राधिकारी कार्यालय, टेढ़ी बाजार, अयोध्या, फैजाबाद (उ.प्र.) भारत-224123

अयोध्या के कतिपय स्मरणीय महापुरुष

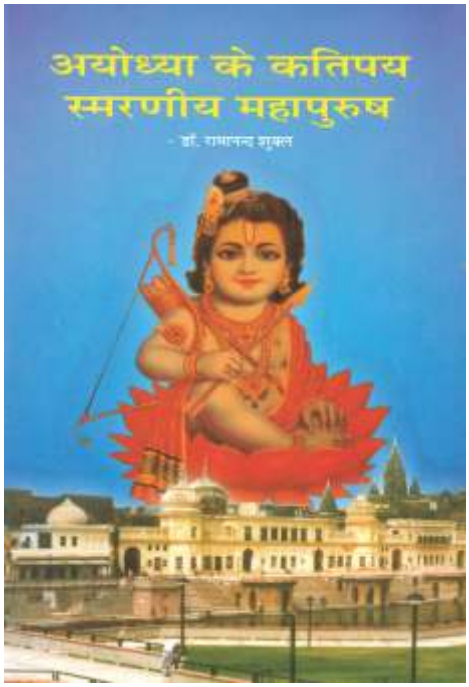

अयोध्या और अवधराजवंश उपर्युक्त परम्पराओं का पोषक-पालक रहा है। महर्षि वाल्मीकि और तुलसी से लेकर कविकुलगुरु कालिदास तक ने रघुवंश और तदंश वंशावतंसों की मान-मर्यादाओं का लोकोत्तर-महत्तर वर्णन प्रचुर-प्रभावोत्पादक ढंग से किया है। इस परम पुण्यप्रदा पृथ्वी ने अनादिकाल से अनेक सिद्ध साधकों-साधु-सन्तों को अवतरित किया, जिनकी तपश्चर्या से इस धवल धरती का कण-कण अद्यावधि विभास्वर हो रहा है और आगे भी यह परम्परा अनवरत अविच्छिन्न उदग्र होती ही रहेगी।

अयोध्या के कतिपय स्मरणीय महापुरुष
डॉ. रामानन्द शुक्ल
मूल्य : ₹ 250
पृष्ठ संख्या : 38
साइज : 7" x 9.5"
प्रकाशक : भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2007

डॉ. रामानन्द शुक्ल

प्रकाशित कृतियाँ
रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, शिवासपादशतक (भक्तिकाव्य)
दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, आज, जनमोर्चा, दैनिक जिम्मेदार, राष्ट्रीय सहारा, अवध कमेंट वीक, धर्मायण, मानसमुक्तामणि, तुलसीदल, मानसमणि, वैराग्य-ज्योति, अवध-अर्चना, साकेत-सुधा आदि पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर बहुतशः लेख और कविताएँ प्रकाशित।

सम्पर्क सूत्र : कालिकुलालालय-तन्त्रसाधना-शोध-शक्तिपीठम्
निकट क्षेत्राधिकारी कार्यालय, टेढ़ी बाजार, अयोध्या, फैजाबाद (उ.प्र.) भारत-224123

अयोध्या में जैन-परम्परा उद्‌भव और विकास

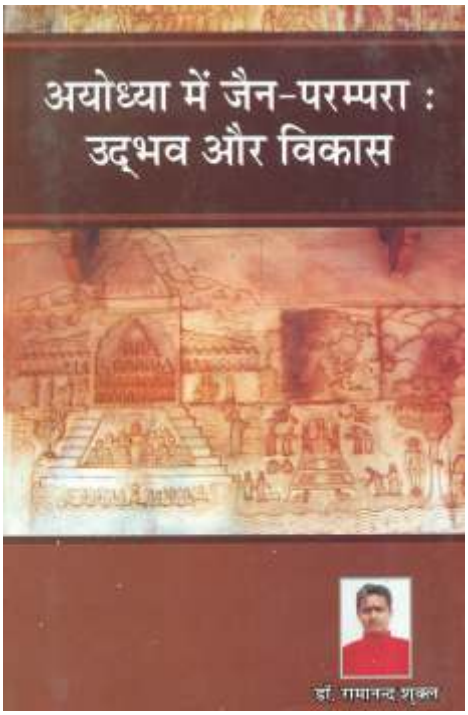

अयोध्या नगरी तो वास्तव में शाश्वत तीर्थ के रूप में इसी धरती के समस्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि मानी गयी है। इसी नगरी से सारे विश्व में जीवन-यापन की कला प्रादुर्भाव हुई तथा शिक्षाजगत् में नारीशिक्षा का सूत्रपात भी इसी अयोध्या की धरती से भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी-सुन्दरी को पढ़ा कर किया। अयोध्या में जैन-परम्परा अनादिकाल से ही है, वर्तमान में वहाँ भले ही जैन जनता का बाहुल्य नहीं है फिर भी अयोध्या के आसपास फैजाबाद, बाराबंकी, लखनऊ, टिकैतनगर आदि नगरों के निवासी जैन श्रद्धालु भक्त अयोध्या को ही अपना जन्मक्षेत्र मानकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझते हैं।

अयोध्या में जैन-परम्परा : उद्‌भव और विकास
डॉ. रामानन्द शुक्ल
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 256
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2009

डॉ. रामानन्द शुक्ल

प्रकाशित कृतियाँ
रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, शिवासपादशतक (भक्तिकाव्य)
दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, आज, जनमोर्चा, दैनिक जिम्मेदार, राष्ट्रीय सहारा, अवध कमेंट वीक, धर्मायण, मानसमुक्तामणि, तुलसीदल, मानसमणि, वैराग्य-ज्योति, अवध-अर्चना, साकेत-सुधा आदि पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर बहुतशः लेख और कविताएँ प्रकाशित।

सम्पर्क सूत्र : कालिकुलालालय-तन्त्रसाधना-शोध-शक्तिपीठम्
निकट क्षेत्राधिकारी कार्यालय, टेढ़ी बाजार, अयोध्या, फैजाबाद (उ.प्र.) भारत-224123

रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान

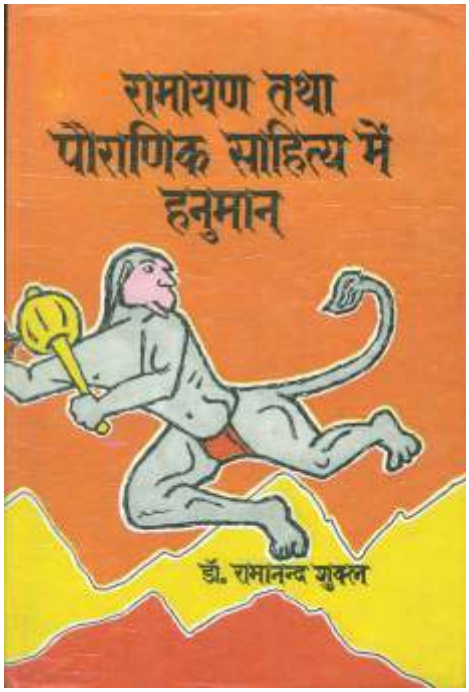

डॉ. रामानन्द शुक्ल द्वारा प्रस्तुत 'रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान' नामक ग्रन्थ को मैंने पढ़ा, मन प्रसन्न हुआ। इसमें हनुमान के विषय में पूर्णरूप से चर्चा हुई है। संस्कृत-साहित्य में बिखरे हुए हनुमद-विषयक वर्णन का संग्रह लेखक ने बड़े मनोयोग से किया है। वाल्मीकीय रामायण तथा अध्यात्म, आनन्द आदि रामायणों के अतिरिक्त पुराणों, काव्यों, नाटकों तथा संस्कृत के स्तोत्र-साहित्य एवं तन्त्र-साहित्य में उपलब्ध हनुमान के चरित्रों का संकलन अपने आप में पूर्ण है। हनुमान की प्रादुर्भाव-तिथि के विषय में विभिन्न मत हैं। किन्तु वस्तुतः मान्यमत की उपस्थापना की जिज्ञासा शान्त नहीं होती, केवल कल्पभेद से समाधान तो एक अगतिक गतिमात्र है। दूसरी बात हनुमान के हाथ में गदा का परिचय कहीं साहित्य में है तो इसका इतिहास क्या है? यह एक जिज्ञासा हनुमद्-भक्त को होती है। इस पर भी थोड़ा प्रकाश डालना चाहिए था। अस्तु।

रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान
डॉ. रामानन्द शुक्ल
मूल्य : ₹265
पृष्ठ संख्या : 276
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : सुलभ प्रकाशन, लखनऊ
प्रकाशन वर्ष : 1996

डॉ. रामानन्द शुक्ल

प्रकाशित कृतियाँ
रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, शिवासपादशतक (भक्तिकाव्य)
दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, आज, जनमोर्चा, दैनिक जिम्मेदार, राष्ट्रीय सहारा, अवध कमेंट वीक, धर्मायण, मानसमुक्तामणि, तुलसीदल, मानसमणि, वैराग्य-ज्योति, अवध-अर्चना, साकेत-सुधा आदि पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर बहुतशः लेख और कविताएँ प्रकाशित।

सम्पर्क सूत्र : कालिकुलालालय-तन्त्रसाधना-शोध-शक्तिपीठम्
निकट क्षेत्राधिकारी कार्यालय, टेढ़ी बाजार, अयोध्या, फैजाबाद (उ.प्र.) भारत-224123